

मे उपरि

सीमा क्षेत्रों के
सुरक्षा के लिए

PLASOP PAN

लासोपेन

इजीनियर्स (इण्डियन)

लिमिटेड

सी-43, ओबला इन्डस्ट्रियल एरिया
फेज-1, नई दिल्ली - 110020

फैक्स: 011-68110928

ईमेल: info@plasopan.com

वेब साइट: www.plasopan.com

सिस्टिन्स

आमंत्रित है।

Bill No. 5/07-08

265

2008-0727

करोडपनी
हम नहीं जानते मगर,
है श्याइन्ट
वित्तवक
अवश्य बन
सकते है
हमारे वपनी

भारत की अग्रगण्य एल पी जे बॉटलींग कंपनी
आमंत्रित करती है एक विशाल श्रृंखला की कड़ी बनने
एक ऐसा व्यवसाय जो वे आपके भविष्य के लिए।

डिरिट्विड डिस्ट्रिब्यूटर के लिए
डिरिट्विड डिस्ट्रिब्यूटर एवं रिटेल विक्रेताओं को कोई भी
डिपॉजिट नहीं देना पड़ेगा, इसका मतलब है कि आपकी
पूरा विज्ञापन प्रसिद्धि का उपयोग मुफ्त में कर सकते हैं।

डिपॉजिट की आवश्यकता नहीं
अगर आप हमारे डिस्ट्रिब्यूटर बनना चाहते हैं
आपका वित्तीय दृष्टि से सब कुछ होगा और आपके पास
कार्यालय एवम् एक्सपोज़र का पूरा उपयोग कर सकते हैं।

रिटेल विक्री केंद्र हेतु आवश्यकताएं
विक्री केंद्रों हेतु आपके पास निम्नलिखित स्थान पर विद्यमान
दुकान, स्थान तथा गैसपॉइंट्स व पी.जी. का प्राथमिक विवरण
एवं फ्लोअर स्टॉक रखने के लिए विधा होगी चाहिए। इसके अलावा
गैसपॉइंट के नये गैस कनेक्शन का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है और फिल
सेवा हेतु फ्लोअर स्टॉक रखना आवश्यक है।

अपने कार्य क्षेत्र के हर एक रिटेल विक्री केंद्रों को नियमित फिल
आपूर्ति प्रदान करने की सुनिश्चिता हमारे रखेंगे।

एल डी आर ए. रेटिंग समानांतर दि. 24.3.2000

गैसपॉइन्ट
पहला माला, 2
दमेलीबाई धर

गैसपॉइन्ट पेट
लियन (इंडिया) लिमिटेड
पहला माला, 2
दमेलीबाई धर

के खाले मालों से
के अधिकारियों को
मंगलवार को भी
कने के कोई आदेश
गैर अधिकारियों ने
के लेकिन उस दिन
ता भुगतान हो गया।

रिजर्व बैंक के भुगतान रोकने की खबर से सरकार
में प्रदेश के उच्च अधिकारियों में हड़ताल शुरू
या।

सरकारी स्तर पर प्रदेश के धन की व्यवस्था
की जाने लगी। मंगलवार को पहर बाद कुल
की व्यवस्था हो पाई तब रिजर्व बैंक ने चेतावनी
के साथ भुगतान खत्म और इसी के साथ प्रदेश

सरकार ने भी साम कने कोषागारों से भुगतान रोक
किया। रिजर्व बैंक सूत्रों के मुताबिक
सरकार अभी भी

सरकार द्वारा सीमा के लग
के ब है। अगर आप इन कुल दिनों में और धन
व्यय नहीं हो पाती राज्य कर्मियों को वेतन

भारत की अग्रगण्य एल पी जे बॉटलींग कंपनी
आमंत्रित करती है एक विशाल श्रृंखला की कड़ी बनने
एक ऐसा व्यवसाय जो वे आपके भविष्य के लिए।

डिरिट्विड डिस्ट्रिब्यूटर के लिए
डिरिट्विड डिस्ट्रिब्यूटर एवं रिटेल विक्रेताओं को कोई भी
डिपॉजिट नहीं देना पड़ेगा, इसका मतलब है कि आपकी
पूरा विज्ञापन प्रसिद्धि का उपयोग मुफ्त में कर सकते हैं।

डिपॉजिट की आवश्यकता नहीं
अगर आप हमारे डिस्ट्रिब्यूटर बनना चाहते हैं
आपका वित्तीय दृष्टि से सब कुछ होगा और आपके पास
कार्यालय एवम् एक्सपोज़र का पूरा उपयोग कर सकते हैं।

रिटेल विक्री केंद्र हेतु आवश्यकताएं
विक्री केंद्रों हेतु आपके पास निम्नलिखित स्थान पर विद्यमान
दुकान, स्थान तथा गैसपॉइंट्स व पी.जी. का प्राथमिक विवरण
एवं फ्लोअर स्टॉक रखने के लिए विधा होगी चाहिए। इसके अलावा
गैसपॉइंट के नये गैस कनेक्शन का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है और फिल
सेवा हेतु फ्लोअर स्टॉक रखना आवश्यक है।

अपने कार्य क्षेत्र के हर एक रिटेल विक्री केंद्रों को नियमित फिल
आपूर्ति प्रदान करने की सुनिश्चिता हमारे रखेंगे।

एल डी आर ए. रेटिंग समानांतर दि. 24.3.2000

गैसपॉइन्ट
पहला माला, 2
दमेलीबाई धर

गैसपॉइन्ट पेट
लियन (इंडिया) लिमिटेड
पहला माला, 2
दमेलीबाई धर

आधिकारी व कम
आधिकारी व कम
आधिकारी व कम

उस घटना के बाद ही सरकार ने रिजर्व बैंक से
ता भुगतान हो गया।

रोज 'फीगर' के अनुसार रिजर्व बैंक के अधिकारियों को
समीक्षा की जा रही है। ताकि आगे

पाट बढ़ने को रोकने में सरकार को अपने
भुगतान रोकने से भुगतान रोकने के लिए

अति खर्च करने पड़े।

इस पद पर एक बार फिर 65 बेच के के
एल. गुप्ता के साथ इसी बैंक के आधिकारिक

शरण की चर्चा चल रही थी। राजनीतिक
समीकरणों के तहत श्री गुप्ता की समाप्ति

भूमिल हो गई। श्री द्विवेदी के मुकाबले श्री शर्मा
का तन्त्रा के साथ बाकी रहने के कारण उन

सम्भवता से रिजर्व बैंक के अधिकारियों की
के ही के अन्य होनादेशक स्तर के अधिकारी भी

मौजूद हैं लेकिन इनमें से श्री शर्मा के इसी वर्ष
अक्टूबर और ए. सी. शर्मा के अगले वर्ष

में रिटायर हो जाने की शक्ति पहले ही उनकी
समाप्ति के बाद उनकी चर्चा नहीं बराबर थी।

योजना के तहत श्री द्विवेदी और भावी पुलिस
महानिरीक्षकों के वतमान और भावी पुलिस

फर्स्ट ग्रेड के निवासी श्रीराम अरुण आगामी 31
जुलाई को रिजर्व बैंक के अधिकारियों की विधुना

तकमिल के तहत श्री द्विवेदी और भावी पुलिस
द्विवेदी को कार्यभार सौंप दे वाकता क्रम में

सभी दलों एक स्व

स्वयत्तता प्रस्ताव ठु

शुरू ही
दर्शन
डो एम.
नामिकन

शिक्षा
का नाम
में 'गड'
ने जिला
कोई आ
बलिक

महेश चन्द्र द्विवेदी

कई दिनों
नयी दिना
नाम तह
लखनऊ

पुलिस
कम है
में आ
ए. ए.
पीली

गौरव
रहने
सम्भ
मह
रहा

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

महानिरीक्षक
महानिरीक्षक
महानिरीक्षक

PAN
KALANIDHI

ACC No.
IGNCA Date: R-727

॥ अथ पंचोपनिषत् प्रारंभः ॥

DATA ENTERED
Date 26/07/08
National
Library of the Arts

चि. १ अथचित्युपनिषत्प्रारंभः । श्रीगणेशप्रसन्नः । श्रीसरस्वतीप्रसन्नाः । हरिः
ॐ तच्छृण्वोरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । देवीः स्वस्तिरस्तु नः । स्व-
स्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजं । शन्नो अस्तु द्विपदे । शंचतुष्पदे । ॐ शांतिः
शांतिः । शांतिः । ॐ चितिसृक् । चित्तमाज्यं । वाग्वेदिः । आधीतं बर्हिः । केतो
अग्निः । विज्ञातमग्निः । वाक्पतिर्होता । मन उपवक्ता । प्राणो हविः । सामां ध्वर्युः ।
वाचस्पते विधेनामन् । विधेम ते नाम । विधेस्तुमस्माकं नाम । वाचस्पतिः सोमं पि-
बतु । आस्मासु नृम्णं धात्स्वाहा १ अध्वर्युः पंचच १ पृथिवीहोता । द्यौरध्वर्युः ।
रुद्रो ग्रीत् । बृहस्पतिरुपवक्ता । वाचस्पते वाचो वीर्येण । सभृततमेनायक्ष्यसे ।
यजमानाय वायं । आसु वस्करस्मै । वाचस्पतिः सोमं पिबति । जुजनदिद्रमिन्द्रिया
यस्वाहा १ पृथिवीहोता दश २ अग्निर्होता । अश्विनां ध्वर्युः । त्वष्टा ग्रीत् । मित्र उद-
वक्ता । सोमः सोमस्य पुरोगाः । शुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः । श्रुतास्त इन्द्रसोमाः । वा-

तापेर्हवनःश्रुतःस्वाहा । अग्निर्होताष्टौ ३ सूर्येतेचक्षुः । वातंप्राणः । द्यांपृष्ठं । अंत-
रिक्षमात्मा । अंगैर्यज्ञं । पृथिवी*शरीरैः । वाचस्पतेच्छिद्रयावाचा । अछिद्रयाजि-
व्हा । दिविदेवावृध*होत्रामेरयस्वस्वाहा ४ सूर्येतेनवा ४ महाहविर्होता । सत्या
हविरध्वर्युः । अच्युतपाजाअग्नीत् । अच्युतमनाउपवक्ता । अनाधृष्यश्चाप्रति
धृष्यश्चयज्ञस्याभिगरौ । अयस्यउद्गाता । वाचस्पतेहृदिधेनामन् । विधेमतेनामं
विधेस्त्वमस्माकंनामं । वाचस्पतिःसोमपात् । मादैव्यस्तंतुच्छेदिमामनुष्यः ।
नमोदिवे । नमःपृथिव्यैस्वाहा १ अपालीणिच ५ वाघोता । दीक्षापत्नी । वातो
ध्वर्युः । आपोभिगरः । मनोहविः । तपसिजुहोमि । भूर्भुवःसुवः । ब्रम्हस्वयंभूः
ब्रह्मणेस्वयंभुवेस्वाहा १ वाघोतानवा ६ ब्राम्हणएकहोता । सयज्ञः । समेददा-
तुप्रजांपशून्पुष्टियशः । यज्ञश्चमेभूयात् । अग्निर्द्विहोता । सभर्ता । समेददातुप्र-
जांपशून्पुष्टियशः । भर्ताचमेभूयात् । पृथिवीत्रिहोता । सप्रतिष्ठा १ समेददातु

चि.

२

प्रजापशून्पुष्टियशः । प्रतिष्ठाचमेभूयात् । अंतरिक्षंचतुर्होता । सविष्टाः । समेद-
दातुप्रजापशून्पुष्टियशः । विष्टाश्चमेभूयात् । वायुःपंचहोता । सप्राणः । समेद-
दातुप्रजापशून्पुष्टियशः । प्राणश्चमेभूयात् १ चंद्रमाःषड्होता । सरुतूनकल्पया-
मि । समेददातुप्रजापशून्पुष्टियशः । ऋतवश्चमेकल्पंतां । अन्नसप्तहोता । स-
प्राणस्यप्राणः । समेददातुप्रजापशून्पुष्टियशः । प्राणस्यचमेप्राणोभूयात् । द्यौ-
रष्टहोता । सोनाधृष्यः १ समेददातुप्रजापशून्पुष्टियशः । अनाधृष्यश्चभूयासं ।
आदित्योनवहोता । सतेजस्वी । समेददातुप्रजापशून्पुष्टियशः । तेजस्वीचभू-
यासं । प्रजापतिर्दशहोता । सद्द* सर्वे । समेददातुप्रजापशून्पुष्टियशः । सर्वे
चमेभूयात् ४ प्रतिष्ठाप्राणश्चमेभूयादनाधृष्यः । सर्वेचमेभूयात् ४ ब्राम्हणोय-
ज्ञोभिर्भर्ता । पृथिवीप्रतिष्ठांतरिक्षंविष्टा । वायुःप्राणश्चंद्रमाःऋतूनन्न*सप्राणस्य
प्राणोद्यौरनाधृष्यआदित्यः । सतेजस्वीप्रजापतिःसद्द*सर्व*सर्वेचमेभूयात् ।

३०

२

१ अ॒ग्निर्य॒जुर्भिः । स॒वि॒तास्तो॒मैः । इ॒न्द्र उ॒क्थाम॒दैः । मि॒त्रावरु॑णावाशिषा । अ॒ग्निर
सो॒धिष्णि॑ण्यैरा॒ग्निभिः । म॒रुतः॑ सदोहवि॒र्धाना॑भ्यां । आपः॒ प्रोक्ष॑णीभिः । औष॒धयो
ब॒र्हिषा । अदि॑तिर्वेद्या । सोमो॑ दीक्षया । अदि॑तिर्वेद्या । सोमो॑ दीक्षया । त्वष्ट्रे॒धमे॑न ।
विष्णु॑र्य॒ज्ञेन॑ । वस॑व आ॒ज्येन॑ । आ॒दि॒त्यादक्षि॑णाभिः । वि॒श्वेदे॒वा ऊ॒र्ज्जा । पू॒षास्व॑गा
का॒रेण॑ । बृ॒हस्प॑तिः पुरो॒धया॑ । प्र॒जाप॑तीरु॒द्गीथे॑न । अ॒न्तरि॑क्षं प॒वित्रे॑ण । वा॒युः पा॒त्रैः ।
अ॒हश्श्र॑द्धया २ दीक्षया पा॒त्रैरेकै॑ च ८ से॒नेन्द्र॑स्य । धे॒ना बृ॒हस्प॑तेः । प॒थ्या पू॒ष्णः । वा
ग्वा॒योः । दी॒क्षा सोम॑स्य । पृ॒थिव्य॑ग्नेः । वसू॑नां गाय॒त्री । रु॒द्राणां॑ त्रिष्टुप् । आ॒दि॒त्यानां॑
जग॑ती । विष्णो॑रनुष्टुप् १ वरु॑णस्य वि॒राट् । य॒ज्ञस्य॑ पं॒क्तिः । प्र॒जाप॑तेरनु॒मतीः । मि
त्रस्य॑ श्र॒द्धा । स॒वि॒तुः प्रसू॑तिः । सूर्य॑स्य मरी॒चिः । च॒न्द्रम॑सो रोहि॒णी । ऋ॒षीणा॑मरु॒ध
ती । पर्ज॑न्यस्य विद्युत् । चत॑स्रो दि॒शः । चत॑स्रो वा॒न्ता दि॒शाः । अ॒हश्च॒रात्रि॑श्च । कृ॒षि
श्च वृ॑ष्टिश्च । त्वि॒षिश्चाप॑चि॒चिति॑श्च । आप॒श्चौष॑धयश्च । उ॒र्के सूनृ॑तां च दे॒वानां॑ प॒त्न-

चि.

३

यः १ अनुष्टुग्दिशः षट्चा १ देवस्य त्वासवितुः प्रसवे । अश्विनोर्बाहुभ्यां । पूष्णो
 हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि । राजा त्वावरुणो नयतु देवि दक्षिणे ग्रये हिरेण्यं । तेनामृतत्व
 मंश्यां । वयो दात्रे । मयो मह्यमस्तु प्रतिग्रहीत्रे । कइदं कस्मादात् । कामः कामाय ।
 कामो दाता १ कामः *प्रतिग्रहीता । काम *समुद्रमाविश । कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि ।
 कामैतत्ते । एषा ते कामदक्षिणा । उत्तानस्त्वांगीरसः । प्रतिगृह्णातु । सोमाय वासः ।
 रुद्राय गां । वरुणाय श्वं । प्रजापतये पुरुषं १ मनवे तल्पं । त्वष्ट्रे जां । पूष्णे वि । नि-
 ऋत्या अश्वतरगर्दभौ । हिमवतो हस्तिनौ । गंधर्वाप्सराभ्यः सृगलंकरणे । विश्वेभ्यो
 देवेभ्यो धान्यं । वाचेन्न । ब्रह्मण ओदनं । समुद्रायापः ३ उत्तनायांगीरसायानः । वै-
 श्वानराय रथं । वैश्वानरः प्रत्नथानाकमारुहत् । दिवपृष्ठं भंदमानः सुमन्माभिः । स-
 पूर्ववज्जनयजंतवेधनं । समानमज्मापरियाति जाग्रविः । राजा त्वावरुणो नयतु दे-
 वि दक्षिणे वैश्वानराय रथं । तेनामृतत्वमंश्यां । वायो दात्रे । मयो मह्यमस्तु प्रतिग्रही

त्रे । कड्दंकरुमादात् । कामः कामाय । कामोदाता । कामः प्रतिग्रहीता । कामः समु-
द्रमाविश । कामेन त्वाप्रतिगृण्णामि । कामैतत्तै । एषाते कामदक्षिणा । उत्तानस्त्वां
गीरसः । प्रतिगृण्हातु ५ दातापुरुषप्रापः । प्रतिग्रहीत्रेन वच १० सुवर्णं घर्मपरिवे-
दवेन । इंद्रं स्यात्मानं दशधा चरंतं । अंतः समुद्रे मनसा चरंतं । ब्रह्मान्वं विदद्वशं हो-
तारमर्णे । अंतः प्रविष्टशस्त्राजनानां । एकः सन् बहुधा विचारः । शतं शुक्राण्य-
त्रैकं भवति । सर्वे वेदाय त्रैकं भवति । सर्वे होतारो यत्रैकं भवति । समानं सीन आत्मा
जनानां १ अंतः प्रविष्टः शस्त्राजनानां स र्यात्मा । सर्वाः प्रजाय त्रैकं भवति । च-
तुर्होतारो यत्र संपदं गच्छंति देवैः । समानं सीन आत्मा जनानां । ब्रह्मेन्द्रं मग्निं जगतः
प्रतिष्ठां । दिवे आत्मा सवितारं बृहस्पतिं । चतुर्होतारं प्रदिशो नुक्नुत । वाचो वीर्यं
तपसान्वं विदत् । अंतः प्रविष्टं कर्तारमेतं । त्वष्टारं रूपाणि विकुर्वंत विपश्चि २ अ-
मृतं स्य प्राणं यज्ञमेतं । चतुर्होतृणामात्मानं कवयो निचिक्वुः । अंतः प्रविष्टं कर्तारं

मेतं । देवानां बंधुनिहितं गुहासु । अमृतैर्नक्षत्रं यज्ञमेतं । चतुर्होतृणामात्मानं कव-
 योनिचिक्युः । शतं नियुतः परि । वेदविश्वाविश्ववारः । विश्वमिदं वृणाति । इंद्रस्या-
 त्मानिहितः पंच होता । अमृतं देवानामायुः प्रजानां ३ इंद्र * राजान * सवितारं मेतं ।
 वायोरात्मानं कवयोनिचिक्युः । रश्मि * रश्मीनां मध्येत पतंतं । ऋतस्य पदे कवयो-
 निपाति । य आँडकोशे भुवनं विभाति । अनिर्भिण्णः सन्नथ लोकान् विचष्टे । यस्यां-
 डकोश * शुष्ममाहुः प्राणामुल्बं । तेनैकृतो मृतैर्नाहमस्मि । सुवर्णकोश * रजसापरी-
 वृतं । देवानां वसुधानां विराजं ४ अमृतस्य पूर्णातामुं कलां विचक्षते । पाद * षट्कोतुर्न
 किला विविक्ते । येन र्तवः पंच धोतकृतः । उत्तवा षडधामनसो तं कृताः । त * षट्कोता-
 रमृतुभिः कल्पमानं । ऋतस्य पदे कवयोनिपाति । अंतः प्रवीष्टं कर्तारं मेतं । अंतश्चंद्र-
 मांसिमनसा चरंतं । सहैव संतं न विजानंति देवाः । इंद्रस्यात्मान * शतधा चरंतं ५ इंद्रो-
 राजा जगतो यद्देशे । सप्तहोता सप्तधा विकृतः । परेण तंतुं परिषिच्यमानं । अंतरादि

त्येमनसाचरंतं । देवानां हृदयं ब्रह्मान्वविंदत् । ब्रह्मैतत् ब्रह्मण उज्जंभार । अर्क
* श्र्योतंत * शरिरस्य मध्ये । आयस्मिन्त्सप्तपेरवः । मेहंति बहुला * श्रियं । बृहश्वा
मिंद्रगोमतीं ६ अच्युतां बहुला * श्रियं । सहर्षिर्वसुवित्तमः । पेरुरीद्रायपिन्वते । बृ
हश्वा मिंद्रगोमतीं । अच्युतां बहुला * श्रियं । मह्यमिंद्रो नियच्छतु । शत * शता अस्य
युक्ताहरीणां । अर्वाज्ञाथा तु वसुभिर्ऋमरिंद्रः । प्रम * हमाणो बहुला * श्रियं । रश्मिर्ऋ
द्रसविता मेनियच्छतु ७ घृतं तेजो मधुमदिंद्रियं । मय्ययमग्निर्दधातु । हरिः पतंगः प
टरी सुपर्णः । दिवीक्ष्यो न भसाय एति । स न इंद्रः कामवरंददातु । पंचारं चक्रं परिव
र्तते पृथु । हिरण्यज्योतिः शरिरस्य मध्ये । अजं स्रज्योतिर्न भसा सर्पदेति । स न इंद्रः
कामवरंददातु । सप्तयुजंतिरथ मेकं चक्रं ८ एको अश्वो बहति सप्तनामा । त्रिनाभिं च
क्रमजरमनर्वं । येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः । भद्रं पश्यंत उपसेदुरग्रे । तपो दीक्षा
मृषयः सुवर्विदः । ततः क्षत्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा अभिसन्नमंतु । श्वेत * र

चि. ५ इमं भो भुज्यमानं । अपाने तारं भुवनस्य गोपां । इन्द्रं निचिक्युः परमेव्यो मन । ९ ।
 रोहिणीः पिंगुला एक रूपाः । क्षरंतीः पिंगुला एक रूपाः । शतं सहस्राणि प्रयुतानि
 नाव्यानां । अयं यः श्वेतो रश्मीः । परिसर्वमिदं जगत् । प्रजां पशून् धनानि । अस्मा
 कं ददातु । श्वेतो रश्मिः । परिसर्वं बभूव । सुवन्मह्यं पशून् विश्वरूपान् । पतंगमक्त
 मसुरस्य मायया १० हृदा पश्यति मनसामनीषिणः । समुद्रे अंतः कवयो विचक्षते ।
 मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः । पतंगो वाचं मनसा विभर्ति । तां गंधर्वो वदद्गर्भे अंतः
 तां द्योतमनां स्वयं मानीषां । ऋतस्य पदे कवयो निपाति । ये ग्राम्याः पशवो विश्वरू
 पाः । विरूपाः संतो बहुधैकरूपाः । अग्निस्ता अग्रे प्रमुक्तदेवः ११ प्रजापतिः
 प्रजयां संविवा नः । वीतं स्तुं के स्तुके । युवमस्मा सुनियच्छतं । प्रप्रयज्ञपतिं तिरा ।
 ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपाः । विरूपाः संतो बहुधैकरूपाः । तेषां सप्तानां मिहरं
 तिरस्तु । रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । य आरण्याः पशवो विश्वरूपाः । वि

रूपाः संतो बहुधैकरूपाः १२ वायुस्ता अग्रे प्रमुक्तदेवः । प्रजापतिः प्रजयां
संविदानः । इडा यै सृष्टं धृतं च श्वराचरं । देवान् विदन् गुहाहितं । य आरण्याः पश-
वो विश्वरूपाः । विरूपाः संतो बहुधैकरूपाः । तेषां सप्तानामिहरंति रस्तु । राय-
स्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय १३ आत्मा जनानां विकुर्वतं विपश्चिं । प्रजानां व-
सुधानी विराजं चरंतं । गोमतीं मे नियच्छत्वेकं चक्रं । व्योमन्मायया देवैकं रूपा अ-
ष्टौ च १४ सहस्रं शीर्षा पुरुषः । सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमिं विश्वतो वृत्वा । अ-
त्यंतिष्ठद्दशांगुलं । पुरुष एवेदं सर्वं । यद्भूतं यच्च भव्यं । उता मृतं त्वस्येशानः यद-
न्नैनातिरोहंति । एतावानस्य महिमा । तोज्यायाश्च पुरुषः १५ पादौ स्य विश्वा भूता
नि । त्रिपादस्यामृतं दिवि । त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः । पादौ स्येह भवात्पुनः । ततो वि-
ष्वव्यं क्रामत् । साशनानशने अभि । तस्माद्द्विराडजायत । विराजो अधिपुरुषः
। सजातो अत्यरिच्यत । पश्चाद्भूमि मथो पुरः १६ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्व

चि.
६

तावसंतो अस्यासिदाज्यं । ग्रीष्मदध्मः शरद्विः । सप्तास्या सन्पारिधयः । त्रिः सप्त
समिधः कृताः । देवायद्यज्ञं तन्वानाः । अवध्नं पुरुषं पशुं । तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् । पु-
रुषं जातमग्रतः १७ तेन देवा अयजन्त । साध्या ऋषयश्च ये । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ।
संभृतं पृषदाज्यं । पशुः स्ताः श्वः केवायव्यान् । आरण्यान् ग्राम्याश्च ये । तस्माद्य-
ज्ञात्सर्वहुतः । ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाः सिजज्ञिरे तस्मात् । यजुस्तस्मादजा-
यत १८ तस्मादश्या अजायन्त । ये केचो भयादतः । गावो हजज्ञिरे तस्मात् । तस्मा-
ज्जाता अजावयः । यत्पुरुषं व्यदधुः । कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्य कौबाहु ।
कावूरूपादावुच्येते । ब्राम्हणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः १९ उरू तदस्य
यद्वैश्यः । पद्भ्यां शूद्रो अजायत । चंद्रमामनसो जातः । चक्षोः सूर्यो अजायत । मुखं
दिन्द्रश्चाग्निश्च । प्राणा ह्यायुरजायत । नाभ्यां आसीदंतरिक्षं । शिष्णोर्द्यौः समवर्तत
। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् । तथा लोकाः अकल्पयन् २० वेदाहमेतं पुरुषं मह्यं तं ।

उ०

६

आदित्यवर्णेतमस्तुपारे । सर्वाणिरूपाणि विचित्यधीरः । नामानिकृत्वा भिवद
न्यदास्ते । धातापुरस्ताद्यमुं दाजहार । शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः । तमेवं वि
द्वानमृतं इह भवति । नान्यः पन्था अयं नाय विद्यते । यज्ञेन यज्ञमयजंत देवाः तानि ध
र्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्ते । यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः २१
पुरुषः पुरो ग्रतो जायत कृतो कल्पयन्नासंद्वेच १३ अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसांश्च ।
विश्वकर्मणः समवर्तताधि । तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति । तत्पुरुषस्य विश्वमाजान
मग्रे । वेदाहमेतं पुरुषं महांतं । आदित्यवर्णेतमस्तुः परस्तात् । तमेवं विद्वानमृतं इह
भवति । नान्यः पन्था अयं नाय विद्यते । प्रजापतिश्चरति गर्भे अंतः । अजायमानो बहु
धा विजायते २२ तस्य धीराः परिजानंतियोनि । मरीचीनां पदमिच्छंति वेधसः ।
यो देवेभ्य आतपति । यो देवानां पुरोहितः । पूर्वो यो देवेभ्यो जातः । नमो रुचाय ब्रा
ह्मणे । रुचं ब्राह्मं जनयंतः । देवा अग्रे तदब्रुवन् । यत्स्वैवं ब्राम्हणो विद्यात् । तस्य दे

वाअसन्वशौ । हीश्वतेलक्ष्मीश्चपत्न्यौ । अहोरात्रेपार्थ्वे । नक्षत्राणिरूपं । अश्वि-
नौव्यात्तैङ्गंमनीषाणा । अमुंमनीषाणा । सर्वमनीषाणा १ जायतेवशैसप्तचा २३
भर्तासन्भ्रियमाणोविभर्ति । एकौदेवोबहुधानिर्वीष्टः । यदाभारंतंद्रयतेसभर्तुः ।
निधायभारंपुनरस्तमेति । तमेवमृत्युममृतंतमाहुः । तंभर्तारंतमुंगोक्षारमाहुः । स
भृतोभ्रियमाणोविभर्ति । यएनंवेदसत्येनभर्तुः । सद्योजातमुतजहात्येषः । उतो ज
रंतंनजहात्येकं २४ उतोब्रह्मनेकमहंजहारा । अतंद्रोदेवःसदमेवप्रार्थं । यस्तद्वेदय
तंआबभूव । संधांचया*संदधेब्रह्मणैषःरमतेतस्मिन्नतर्जिर्णेशयानि । ननंजहा
त्यहंसुपूर्वेषु । त्वामापोअनुसर्वाश्चरंतिजानतीः । वत्संपयसापुनानाःत्वमग्निःह
व्यवाह*समित्से । त्वंभर्तामातरिश्वाप्रजानां २५ त्वंयज्ञस्त्वमुवेवासिसोमः । त-
वदेवाहवमायंतिसर्वे । त्वमेकोसिब्रह्मननुप्रविष्टः । नमस्तेअस्तुसुहवोमएधि । न-
मोवामस्तुश्रुणुत*हवमे । प्राणापानावजिर*संचरंतौ । ब्रह्मांमिवांब्रह्मणातूर्तमे

तै । योमांद्वेष्टितं जहितं युवाना । प्राणां पानौ संविद्वानौ जहितं । अमुष्या सुनापासं-
गसाथां २६ तं मे देवा ब्रह्मणा संविद्वानौ । वधाय दत्तं तं मह * ह्वनामि । असंज्ज जान
सुत आबभूव । यं यं ज जान सुउगोपो अस्य । यदा भारं तं द्रयं ते स भर्तुः । परास्व भारं पु
नरस्तं मेति । तद्वै तं प्राणो अभवः । महान् भोगः प्रजापतेः । भुजः करिष्यमाणः यद्दे-
वान् प्राणं योनवा २७ एकं प्रजानां गसाथानवा १५ हरि * हरं तं मनुं यं ति देवाः वि-
श्वस्येशानं वृषभं मंतीनां । ब्रम्ह सरूपं मनु मे दमागात् । अयं न मा विदधीर्विक्रमस्व ।
मा छिदो मृत्यो मा वधीः । मामेवलं विद्वद्दो मा प्रमौषी । प्रजां मामैरीरिष अयुरुग्र । नू
चक्ष संत्वाह विषा विधेम । सुद्यश्च कमानाय । प्रवेपानाय मृत्यवे २८ प्रास्मा आशा
अशृण्वन् । कामेना जयन् पुनः । कामेन मे काम आगात् । हृदया त्धृदयं मृत्योः । य
दमीषामदः प्रियं । तद्वै तू पमामभिः । परं मृत्यो अनु परं हि पंथां । यस्ते श्व इतरो देव
यानात् । चक्षुष्म ते शृण्वते तै ब्रवीमि । मानः प्रजा * रीरिषो मोत वीरान् । प्रपूव्यं

चि.

८

मनसावंदमानः । नाधमानो वृषभं चर्षणीना । यः प्रजानामेकरा एमानुषीणां । मृत्युं
 यजे प्रथमजामृतस्य २९ मृत्यवे वीराश्च त्वारिच १६ तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योति
 ष्कृदसि सूर्य । विश्वमाभासिरोचनं । उपयामगृहीतौ सिसूर्याय त्वा । भ्राजस्व ते
 एष ते योनिः । सूर्याय त्वा भ्राजस्व ते १७ आप्यायस्व मर्दितमसोम विश्वाभिरुति
 मिः । भवानः स प्रथमस्तमः १८ इयुष्टेये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छंति मुषसं मर्त्यासः ।
 अस्माभिरुनु प्रति चक्ष्या भूदो तोयंति ये अपरीषु पश्यान् १९ ज्योतिष्मतीं त्वासाद
 यामि ज्योतिः ष्कृतं त्वासादयामि ज्योतिर्विदं त्वासादयामि भास्वतीं त्वासादयामि
 ज्वलंतीं त्वासादयामि मल्लाला भवतीं त्वासादयामि दीप्यमानां त्वासादयामि रो-
 चमानां त्वासादयाम्यजस्ना त्वासादयामि बृहज्योतिषं त्वासादयामि बोधयंतीं त्वा-
 सादयामि जाग्रतीं त्वासादयामि २० प्रयासाय स्वाहा । यासाय स्वाहा । वियासाय
 स्वाहा । संयासाय स्वाहा । द्यासाय स्वाहा । वयासाय स्वाहा । शुचे स्वाहा । शोकाय

८

स्वाहा । तप्यस्त्वैस्वाहा तपते स्वाहा । ब्रह्महत्यायै स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा २१ चि-
त्तं संतानेन भवं यवं ब्रारुद्रं ते निम्ना पशुपतिः * स्फूलहृदये नाग्निः * हृदये न रुद्रं लोहि-
तेन शर्वं मत्स्नाभ्या महादेव मंतः पार्श्वे नौषिष्ठहः * शिंगिनिको शाभ्यां २२ ज्योति-
ष्मतीं प्रयासाय चित्तमेकं । चित्तिः पृथिव्यग्निः । सूर्ये ते चक्षुर्महाहं विहोता वध्वोता ।
ब्राम्हण एकं होताग्निर्यजुभिः । सेनेंद्रस्य देवस्य । सुवर्णे घर्मः * सहस्रं शिर्षाद्भ्यो भ-
र्ता हंतरणिराप्यायस्वे युष्ठे ये ज्योतिष्मतीं । प्रयासाय चित्तमेकं वि * शतिः । चित्ति-
रग्निर्यजुभिरंतः प्रविष्टः । प्रजापतिर्भर्ता प्रजया संविदानस्तस्य धीरा ज्योतिष्मतीं
त्रिपंचाशत् २३ तच्छं योरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवीं स्वस्तिरं-
स्तुनः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु मे षजं । शंनो अस्तु द्विपदे । शंचतुष्पदे
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । इति उपनिषदादिचित्तिप्रथमसिद्धांतः । ६९ ।
अथ सहवैकाठप्रारंभः । श्रीगणेशाय नमः । हरिः ॐम् । नमो ब्रह्मणे नमो अ-

स्त्वग्नयेनमः पृथिव्यैनम ओषधीभ्यः । नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेवृ-
 हतेकरोमि । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । ॐ सहवैदेवानां चासुराणां च यज्ञौ प्रतंतावा
 स्तां वयं स्वर्गलोकमेष्यामो वयमेष्याम इति ते सुराः सन्नह्य सहसैवाचरन्ब्रह्मच-
 र्येण तपसैव देवास्ते सुरा अमुह्य * स्त्रेन प्रजान् * स्ते परा भवन्ते न स्वर्गं लोकमाय-
 न्प्रसृते न वै यज्ञे न देवाः स्वर्गं लोकमायन्न प्रसृते नासुरान्परां भावयन् प्रसृतो ह वै य-
 ज्ञो पवीति नो यज्ञो प्रसृतो नु पवीति नो यत्किंच ब्राम्हणो यज्ञो पवीत्यधीते यजंत एव-
 तत्तस्माद्यज्ञो पवीत्येवाधीयीत याजयेद्यजैत वा यज्ञस्य प्रसृत्या अजिनं वा सो वा द-
 क्षिण त उ पवीय दक्षिणं बाहुमुद्धरते बधत्ते सव्यमिति यज्ञो पवीतमेतदेव विपरीतं-
 प्राचीना वीत * संवीतं मानुषं १ रक्षा * सिंहवा पुरोनुवाके तपो ग्रमतिष्ठंतान् प्रज्ञा-
 पतिर्वरेणोपामंत्रयत तानि वरं मवृणीतादित्यो नो योद्धा इति तान् प्रजापतिरब्रवी-
 द्योधं यध्वमिति तस्मादुत्तिष्ठंत * हवातानि रक्षा * स्यादित्यं योधं यंतियावं दस्तम

नवंगात्तानिहवाएतानिरक्षा * सिगायत्रियाभिमंत्रितेनांभसाशांम्यंतितदुहवाए
तेब्रह्मवादिनःपूर्वाभिमुखाःसंध्यायांगायत्रियाभिमंत्रिता आपर्ध्वविक्षिपंतित ।
एता आपोवजीभूत्वातानिरक्षा * सिमंदेहारुणेद्वीपेप्रक्षिपंतियत्प्रदक्षिणं प्रक्रमं-
तितेनपाप्मानमवधून्वंत्युद्यंतमस्तयंतमादित्यमभिध्यायन्कुर्वन्ब्राह्मणोविद्वा-
न्त्सकलंभद्रमंश्रुतेसावादित्योब्रह्मेतिब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येतियएवंवेद २ यद्वैवादे
वहेळनंदेवांसश्चकृमावयं । आदित्यास्तस्मान्मामुंचतर्त्तस्यर्त्तेनमामित । देवां
जीवनकाम्यायद्वाचानृतमूदिम । तस्मान्नइहमुंचतविश्वेदेवाःसजोषंसः । ऋ-
तेनद्यावापृथिवीऋतेनत्व * सरस्वति । कृतान्नःपाह्येनसोयत्किंचानृतमूदिम ।
इंद्राग्नीमित्रावरुणौसोमोधाताबृहस्पतिः । तेनोमुंचत्वेनसोयदन्यकृतमारिम
सजातशःसादुतजामिशःसाज्ज्यायसःशःसादुतवाकनीयसः । अनाधृष्टं देवकृ
तंयदेनस्तस्मात्वमस्मांज्जातवेदोमुमुग्धि । यद्वाचायन्मनसाबाहुभ्यामूरुभ्याम

स०

१०

ष्ठीवभ्यांश्चिश्रैर्यदन्तंचकृमावयंअग्निर्मातस्मादेनसोगाहपत्यैःप्रमुंचतुचकृम
 यानिदष्कृतायेनत्रितोअर्णवांन्निर्वभूवयेनसूर्यतमसोनिर्मुमोचयेनेद्रोविश्वाअ-
 जहादरातीस्तेनाहंज्योतिषाज्योतिरानशानआक्षि । यत्कुसीदमप्रतीत्तंमयेहये
 नयमस्यनिधिनाचरामि । एतत्तदग्रेअनृणोभवामिजीवन्नेवप्रतितत्तेदधामि । य
 न्मयिमातायदापिपेषयदंतरिक्षंयदाशसातिक्रामामित्रितेदेवादिविजातायदाप
 इमंमेवरुणतत्त्वायामित्वन्नोअग्नेसत्वन्नोअग्नेत्वमग्नेअयासि ३ यददीव्यंनृणमहं
 वमूवादिस्मन्वासंजगरजनेभ्यः । अग्निर्मातस्मादिद्रंश्चसंविदानौप्रमुंचतां । यद्ध
 स्ताभ्यांचकरकिल्बिषाण्यक्षाणांवृणुमुपजिघ्रमानःउग्रंपश्याचराष्ट्रभृच्चतान्यप्स
 रसावनुदत्तामृणानि । उग्रंपश्येराष्ट्रभृत्किल्बिषाणियदक्षवृत्तमनुदत्तमेतत् । नेन्न
 ऋणानृणवइत्समानोयमस्यलोकेअधिरज्जुराय । अवतेहेळउदुत्तममिमंमेधरुण
 तत्त्वायामित्वन्नोअग्नेसत्वन्नोअग्ने।संकुसुकोविकुसुकोनिर्ऋथोयश्चनिस्वनःतेये

स्मद्यक्षममनागसोदुराहुरमचीचतं। निर्यक्षममचीचतेकृत्यानिर्ऋतिंच। तेनयोः
स्मत्समृच्छातैतमस्मैप्रसुवामसि। दुःशःसानुशःसाभ्याघ्रणेनानुघ्रणेनच। तेना
न्योःस्मत्समृच्छातैतमस्मैप्रसुवामसि। संवर्चसापयसासंतनूभिरगन्महिमनसा
सःशिवेन। त्वष्टानोअत्रविदधातुरायोनुर्माष्टृतन्वोःयद्विलिष्टं ४ आयुष्टेविश्वतो
दधदयमग्निर्वरेण्यः। पुनस्तेप्राणआयातिपरायक्षमःसुवामिते। आयुर्दाअग्नेहृवि
षोऽजुषाणोघृतप्रतीकोघृतयोनिरेधि। घृतंपीत्वामधुचारुगव्यंपितेवपुत्रमभिरक्ष
तादिमंडममग्नआयुषेवर्चसेकृधितिग्ममोजावरुणसःशिश्राधि। मातेवास्माअ-
दितेशमयच्छविश्वेदेवाजरदृष्टिर्यथासत्। अग्नआयूःषिपवसआसुवोर्जमिषंचनः
। आरेबाधस्वदुल्लुनां। अग्नेपवस्वस्वपाअस्मेवर्चःसुवीर्यं। दधद्रयिमयिपोषं। अ-
ग्निर्ऋषिःपवंमानःपांचजन्यःपुरोहितः। तमीमहेमहागयं। अग्नेजातान्प्रणुदानः
सपत्नान्प्रत्यजातान्जातवेदोनुदस्व। अस्मेदीदिहिसुमनाअहंलंछमतेस्यामात्रि

स०
११

वरुथउद्भौ । सहसाजातान्प्रणुदानःसपत्नान्प्रत्यजातान्जातवेदोनुदस्व । अधि
 नोब्रूहिसुमनस्यमानोवयस्यामप्रणुदानःसपत्नान् । अग्नेयोनोभितोजनोवृको-
 वारोजिघांसति । तास्त्वंवृत्रहंजहिवस्वस्वभ्युमाभर । अग्नेयोनोभिदासंति
 समानोयश्चनिष्ठाः । तंवयस्समिधंकृत्वातुभ्यमग्नेपिदध्मसि । योनःशपादशपतो
 यश्चनःशपतःशपात् । उषाश्चतस्मैनिमृकसर्वपापसमूहतां । योनःसपत्नोयोर-
 णोमर्तोभिदासंतिदेवाः । इध्मस्यैवप्रक्षायतोमातस्योच्छेषिकिंचन । योमांद्वेष्टिजा
 तवेदोयंचाहंद्वेष्टिमयश्चमां । सर्वास्तानग्नेसंदह्याश्चाहंद्वेष्टिमयेचमां । योअस्म
 भ्यमरातीयाद्यश्चनोद्वेष्टतेजनःनिंदाद्योअस्मादिप्साच्चसर्वास्तान्मष्मषाकुरु
 सशितंमेब्रम्हसशितंवीर्या । आंबलंसशितंक्षत्रंमैजिष्णुयस्याहमस्मिपुरोहि
 तः । उदेषांवाहूअतिरमुद्वर्चोअथोबलं । क्षिणोमिब्रह्मणामित्रानुन्नयामिस्वां । अहं
 पुनर्मनःपुनरायुर्मआगात्पुनःश्चक्षुःपुनःश्रोत्रमआगात्पुनःप्राणःपुनराकूतंमआ

गात्पुनश्चितं पुनराधीतं म आगात् । वैश्वानरो मे दब्धस्तनूपा अवबाधतां दुरितानि
विश्वा ५ वैश्वानराय प्रतिवेदयामो यदी नृणः संगरो देवतासु । स एतान्पाशान् प्रमु-
चन् प्रवेदसनो मुंचातु दुरितादवद्यात् । वैश्वानरः पर्वयान्नः पवित्रैर्यत्संगरमभिधा-
वां म्याशां । अनां जानन् मनसा याचमानो यदत्रैनो अवतत्सु वामि । अमी ये सुभगे दि-
विविचृतौ नाम तारके । प्रेहामृतस्य छता मे तद्वद्धकमोचनं । विजिहीर्ष्व लोकान् कृधि
बन्धान् मुंचासि बद्धकं । यो नैरिव प्रच्युतो गर्भसर्वान् पथो अनुष्व । स प्रजान् प्रतिगृ-
भ्णीत विद्वान् प्रजापतिः प्रथम जा ऋतस्य । अस्माभिर्दत्तं जरसः परस्ताद छिन्नं तंतुं
मनुसंचरेम । तंतंतंतुमन्वेके अनुसंचरंति षां दत्तं पिब्यमानं न वत् । अबन्ध्वेके ददतः
प्रयच्छाद्वातुं चेच्छक्रवाः सः स्वर्ग एषां । आरंभेथामनु स रंभेथाः समानं पंथां मवथो
घृतेन । यद्वां पूर्त्तं परिविष्टं यदग्नौ तस्मै गोत्रायै ह जायापती स रंभेथां । यदंतरिक्षं पृ-
थिवीमुतद्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिः सिम । अग्निर्मातस्मादेन सो गार्हपत्य उन्नोने

स०

१२

षडुरितायानिचकूम। भूमिर्मातादितिर्नोजनित्रं भ्रातांतरिक्षमभिशास्तएनः द्यौर्नैः
 पितापितृयात्छं भवासिजामिमित्वामाविवित्सिलोकात्। यत्र सुहार्दः सुकृतो मदंते
 विहाय रोगं तन्वा। * स्वायं अश्लोणागैरद्भुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरं च पुत्रं। यद
 न्नमन्ननृतेन देवादास्यं न्नदास्यं न्नतवां करिष्यन्। यद्देवानां च क्षुण्यागो अस्ति यदेव
 किंच प्रतिजग्राहमग्निर्मातस्मादनृणं कृणोतु। यदन्नमग्निं बद्ध्वा विरूपं वा सो हिरण्यं
 मुतगामजामविं। यद्देवानां च क्षुण्यागो अस्ति यदेव किंच प्रतिजग्राहमग्निर्मातस्मा
 दनृणं कृणोतु। यन्मयामनसा वाचा कृतमेनः कदाचन। सर्वस्मात्तस्मान्भेळितो मो
 ग्धित्व * हिवेत्थं यथा तथं ६ वातरशना हवा ऋषयः श्रमणा उर्ध्वमंथिनो बभ्रुवुस्ता
 नृष्योर्थमाय * स्तेनिलायं मचर * स्तेनुं प्रविशुः कुशमांडानिता * स्तेष्वन्वविंदन्छ
 द्या च तपसा च तानृष्यो ब्रुवन्कथानिलायं चरथेति तं ऋषीन् ब्रूवन्नमो वोस्तु भगवं
 तो रिमधां म्लिकेन वः सपर्यामेति नानृष्यो ब्रुवन्पवित्रं नो ब्रूतये नो रिपसं स्यामेति त-

एतानि सुक्तान्यपश्यन् यद्देवा देवहेळनं यददीव्यं नृणामहं बभूवायुष्टे विश्वतो दधदि-
त्येतैराज्यं जुहुत वैश्वानराय प्रतिवेदयाम इत्युपतिष्ठत यदर्वाचीनमेनो भ्रूणहत्या-
यास्तस्मान्मोक्ष्यध्व इति त एतैरजुहवुस्तेरेपसो भवन्कर्मादिष्वेतैर्जुहुयात्पूतो देव
लोकान्त्समं श्रुते ७ कूश्मांडैर्जुहुयाद्योपूत इव मन्येत यथास्तेनो यथाभ्रूणहैव मेष-
भवति यो यो नोरेतः संचति यदर्वाचीनमेनो भ्रूणहत्यायास्तस्मान्मुच्यते यावदेनो
दीक्षामुपैति दीक्षित एतैः संतति जुहोति संवत्सरं दीक्षितो भवति संवत्सरा देवात्मा
नंपुनीते मासं दीक्षितो भवति यो मासः स संवत्सरः संवत्सरा देवात्मानं पुनीते चतु-
र्वि * शति * रात्रीर्दीक्षितो भवति चतुर्वि * शति रर्धमासाः संवत्सरः संवत्सरा देवा
त्मानं पुनीते द्वादशरात्रीर्दीक्षितो भवति द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरा देवात्मा-
नंपुनीते षड्रात्रीर्दीक्षितो भवति षड्वाक्रुतवः संवत्सरः संवत्सरा देवात्मानं पुनीतेति
स्रोरात्रीर्दीक्षितो भवति त्रिपदा गायत्री गायत्रिया एवात्मानं पुनीतेन मा * समं श्री

स०
१३

यान्नस्त्रियमुपेयान्नोपर्यासीत्तजुगुप्सेतानृतात्पयोब्राम्हणस्यव्रतंयवागूराजन्य-
 स्यामिक्षावैश्यस्याथोसौम्येप्यध्वरएतद्व्रतं ब्रूयाद्यदिमन्येतोपदास्यामीत्योदनं
 धानाःसक्तुन्धृतमित्यनुव्रतयेदात्मनोनुपदासाय ८ अजान्हवैष्ट्री*स्तपस्यमा-
 नान्ब्रह्मस्वयंभ्वभ्यानर्षत्तक्रुमयोभवन्तदृषीणामृषित्वंतादेवतामुपातिष्ठंतयज्ञ-
 कामास्तएतंब्रह्मयज्ञमपश्यन्तमाहुरंतेनायजंतयदृचोध्यगीषतताः पर्यआहुत-
 योदेवानामभवन्यद्यजू*षिघृताहुतयोयत्सामानिसोमाहुतयोयदथर्वागिरसोम
 ध्वाहुतयोयद्ब्राम्हणानीतिहासान्पुराणानिकल्पान्गाथानाराश*सीमंदाहुतयोदे-
 वानामभवन्ताभिःक्षुधंपापमानमापाघ्नन्नपहतपाप्मानोदेवाः स्वर्गलोकमाय-
 न्ब्रह्मणःसायुज्यमृषयोगछन् ९ पंचवाएतेमहायज्ञाःसंततिप्रतायंतेसंततिसंति
 षंतेदेवयज्ञःपितृयज्ञोभूतयज्ञोमनुष्ययज्ञोब्रह्मयज्ञइतियदमौजुहोत्यपिसमिधं
 तद्देवयज्ञःसंतिष्ठतेयत्पितृभ्यःस्वधाकरोत्यप्यपस्तत्पितृयज्ञःसंतिष्ठतेयद्रूते-

भ्यो बलिः हरति तद्रूतयज्ञः संतिष्ठते यद्वा मृहणे भ्यो न्नंददाति तन्मनुष्ययज्ञः संतिष्ठ
ते यत्स्वाध्यायमधीयीतैकामप्युचैयजुः सामेवातद्रह्ययज्ञः संतिष्ठते यदृचौधीते प-
यसः कुल्या अस्य पितृन्त्स्वधा अभिवहंति यद्यजुः षिघृतस्य कूल्याय त्सामानि सो-
म एभ्यः पवते यदथर्वागिरसो मधोः कूल्याय द्वा मृहणानीति द्वासान्पुराणानि कल्पा-
न्गाथानां नाराशः सीमैदस कूल्या अस्य पितृन्त्स्वधा अभिवहंति यदृचौधीते पय आ-
हुतिभिरेव तद्देवाः स्तर्पयति यद्यजुः षिघृताहुतिभिर्यत्सामानि सोमाहुतिभिर्यद-
थर्वागिरसो मध्वाहुतिभिर्यद्वा मृहणानीति द्वासान्पुराणानि कल्पान्गाथानां नाराशः *
सीमैदाहुतिभिरेव तद्देवाः स्तर्पयति न एनंतु सा आयुषा ते जसावचैसा श्रिया यशः--
सा ब्रह्मवर्चसेना न्नाद्येन च तर्पयति १० ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्यमाणः प्राच्यादिशि ग्रामा
दच्छदिदर्श उदीच्यां प्रागुदीच्यां वोदित आदित्ये दक्षिणत उपवीयो पविश्य हस्ताव
वानि ज्यात्रिराचामेद्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य शिरश्चक्षुषीनासिके श्रोत्रे हृदयमाल

स०

१४

भ्ययत्रिराचामातितेन ऋचः प्रीणाति यद्विः परिमृजति तेन यजुः षियत्स कृदुपस्पृ-
 शति तेन सामानियत्स व्यं पाणि पादौ प्रोक्षति यच्छिरश्चक्षुषीनासिकेश्रोत्रे हृदयमा-
 लभते तेनाथर्वांगिरसौ ब्राम्हणानीति हासान्पुराणानि कल्पान्गाथानाराशः सी-
 प्रीणाति दर्भाणां महदुपस्तीर्यो पस्छैकृत्वा प्राडासीनः स्वाध्यायमधीयीतापां वा ए-
 ष ओषधीनां रसो यद्दर्भाः सरं समे ब्रह्म व कुरुते दक्षिणोत्तरौ पाणी पादौ कृत्वा स पवि-
 त्रावोमिति प्रतिपद्यत एतद्वै यजुस्त्रयीं विद्यां प्रत्येषां वागे तत्परममक्षरं तदतेह चाभ्यु-
 क्तमृचो अक्षरं परमेव्यो मन्यस्मि देवा अधिविश्वे निषेदुर्यस्तन्न वेद किमृचा किरिष्य-
 तिय इत्तद्विदुस्तद्वमे समासत इति त्रीनेव प्रायुंक्त भूर्भुवः स्वरित्या हितैतद्वै वाचः सत्यं य-
 देव वाचः सत्यं तत्प्रायुंक्ताथ सा वित्री गायत्री त्रिरन्वाह पच्छोर्ध्वं चैशोनवाः सविता
 श्रियः प्रसविता श्रियमेवाप्नोत्यथो प्रज्ञातयैव प्रतिपदा छंदाः सति प्रतिपद्यते ११ प्रा-
 मे मनसा स्वाध्यायमधीयीत दिवानक्तं वेति हस्माह शौच आन्धेय उत्तरण्ये बलं उता

वाचोततिष्ठन्नतत्रजंनुतासीनउतशयानोधीयीतैवस्वाध्यायंतपस्वीपुण्योभवति
यएवंविद्वान्स्वाध्यायमधीतेनमोब्रह्मणेनमोअस्त्वग्नयेनमःपृथिव्यैनमओषधी
भ्यः । नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेबृहतेकरोमि १२ मध्यंदिनेप्रबल-
मधीयीतासौखलुवाधैषआदित्योयद्ब्राह्मणस्तस्मात्तर्हि तेक्षिणष्ठतपतितदेषा-
भ्युक्ताचित्रंदेवानामुदंगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावापृथिवीअं
तरिक्षं सूर्यं आत्माजगतस्तस्थुषश्चेतिसवाएषयज्ञः सद्यः प्रतायतेसंद्यसंतिष्ठते
तस्यप्राक्सायमंवभूथोनमोब्रह्मणइतिपरिधानीयांत्रिरन्वाहापउपस्पृश्यगृहाने
तिततोयत्किंचददातिसादक्षिणा १३ तस्यवाएतस्ययज्ञस्यमेघोहविधानैवि-
द्युदग्निर्वर्षश्हविस्तंययित्नुषट्कारोयदवस्फुर्जतिसोनुवषट्कारोवायुरात्मा मावा-
स्याःस्विष्टकृद्यएवंविद्वान्मेघेवर्षतिविद्योतमानेस्तनयत्यवस्फुर्जतिपवमानेवा-
यावमावास्यायाश्स्वाध्यायमधीतेतपएवतत्तप्यतेतपोहिस्वाध्यायइत्युत्तमज्ञाक

*रोहत्युत्तमःसमानानांभवतियावंत*हृवाहमांवित्तस्यंपूर्णांददत्स्वर्गेलोकंजयति
 तावंतंलोकंजयतिभूया*संचाक्षय्यंचापपुनर्मृत्युंजयतिब्रह्मणःसायुज्यंगच्छति
 १४ तस्यवाएतस्ययज्ञस्यद्वावनध्यायौयदात्माशुचिर्षद्वेशःसमृद्धिर्देवतानियए
 वंविद्वान्महारात्रउषस्युदितेव्रज*स्तिष्ठन्नासीनःशयानोरण्येग्रामेवायावत्तरस*
 स्वाध्यायमधीतेसर्वालोकंजयतिसर्वान्लोकाननृणोनुसंचरतितदेषाभ्युक्ता। अ
 नृणाअस्मिन्ननृणाःपरस्मि*स्तृतीयेलोकेअनृणास्याम। येदेवयानाउतपितृया
 णाःसर्वापथोअनृणाआक्षीयमेत्यग्निर्वैजातंपापमाजग्राहतंदेवाआहुतीभिपाम्मा
 नमपाघ्नान्नाहुतीनांयज्ञेनयज्ञस्यदक्षिणाभिर्दक्षिणानांब्राम्हणेनब्राम्हणस्यछं
 दौभिः*छंदसा*स्वाध्यायेनापहतपाप्मास्वाध्यायोदेवपवित्रंवाएतत्तंयोनूत्सृज
 त्यभागोवाचिभवत्यभागोनाकेतदेषाभ्युक्तायस्तित्याजंसखिविद*सखायन्नत
 स्यवाच्यपिभागोअस्ति। यदी*शृणोत्यलक*शृणोतिनहिप्रवेदसुकृतस्यपंथा

मितितस्मात्स्वाध्यायोध्यैतव्योयंयंक्रतुमधीतेतेनतनासेयंष्टभवत्येग्रवोयोरादि-
त्यस्यसायुज्यंगच्छतितदेषाभ्युक्ता । येअर्वाहुतवापुराणेवेदंविद्वा *समभितौ-
वदंत्यादित्यमेवतेपरिवदंतिसर्वेअग्निद्वितीयतृतीयचबह *समितियावतीवेदेव-
तास्ताः सर्वावेदविदिब्राम्हणेवसंतितस्मांब्राम्हणेभ्योवेदविद्भ्योदिवेदिवेनम-
स्कुर्यान्नाश्लीलंकीर्तयेदेताएवदेवताःप्रीणाति १५ रिच्यंतइववाएषप्रेवरिच्य-
तेयोयाजयतिप्रतिवागृण्हातियाजयित्वाप्रतिगृह्यवानंश्रंत्रिःस्वाध्यायंवेदमधी-
यीतत्रिरात्रंवासाविर्वागायत्रीमन्वातिरेचयतिवरोदक्षिणावरणेववर * स्पृणो-
त्यात्माहिवरः १६ दुहेहवाएषछंदा * मियोयाजयतिसयेनयज्ञक्रतुनायाजयेसो-
रण्यंपरेत्यंशुचौदेशेस्वाध्यायमेवैनमधीयन्नासीततस्यानशनंदीक्षास्छानमुपस-
दआसन * सुत्यावाग्जुहुर्मनउपभृधृतिध्रुवाप्राणोहविः सामाध्वर्युःसवाएषयज्ञः
प्राणदक्षिणोनंतदक्षिणःसमृद्धतरः १७ कतिधावकीर्णिप्रविशतिचतुर्द्वेत्याहुर्ब्र

ह्यवादिनो मरुतः प्राणैरिंद्रबलैर्न बृहस्पतिर्ब्रह्मवर्चसेनाग्निमेवेतरेण सर्वेण तस्यै-
 तां प्रायश्चित्तिं विदां चकार सुदेवः काश्यपो यो ब्रह्मचार्यवकिरेदमावास्याया श्रा-
 न्यामग्निं प्रणीयोपसमाधाय द्विराज्यस्योपघातं जुहोति कामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णो
 स्मि कामकामाय स्वाहा कामाभिद्रुग्धोऽस्म्यभिद्रुग्धो स्मि कामकामाय स्वाहेत्यमृ-
 तं वा आज्यममृतमेवात्ममंधत्ते हुत्वा प्रयतां जलिः कवातिर्यङ्ङग्निमभिमंत्रयेत्संमा-
 सिंचतु मरुतः समिद्रसंबृहस्पतिः संमायमग्निसिंचत्वा यूषाचबलैर्न चायुष्मंतं करो-
 तमेति प्रतिहास्मै मरुतः प्राणां दधति प्रतीद्वो बलं प्रति बृहस्पतिर्ब्रह्मवर्चसंप्रत्य-
 ग्यिरितरत्सर्वं सर्वतनुर्भूत्वा सर्वमायुरेति त्रिरभिमंत्रयेत् त्रिषत्याहि देवा यो पूत इ-
 व मन्येत स इत्थं जुहुयदित्यमभिमंत्रयेत् पुनीत एवात्मानमायुरेवात्ममंधत्ते वरो दाक्षि-
 णावरेणैवरः स्पृणोत्यात्माहिवरः १८ भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये स्वः प्रपद्ये भूर्भुवस्वः
 प्रपद्ये ब्रह्म प्रपद्ये ब्रह्म कोशं प्रपद्ये मृतं प्रपद्ये मृतकोशं प्रपद्ये चतुर्जालं ब्रह्म कोशं यं-

मृत्युर्नावपश्यति तं प्रपद्ये देवान् प्रपद्ये देवपुरं प्रपद्ये परीवृतो वरीवृतो ब्रह्मणा वर्मणा
हं ते जसा कश्यपस्य यस्मै नमस्तस्मिन् स्थिरो धर्मो मूर्धानं ब्रम्होत्तराह नुर्यज्ञो धरा विष्णुह
दयः संवत्सरः प्रजननमश्विनो पूर्वपादावत्रिर्मध्यमित्रावरुणावपरपादावग्निः पुच्छ
स्य प्रथमं काण्डं तत इन्द्रस्ततः प्रजापतिरभयं चतुर्थः सवा एषा दिव्यः शाक्रः शिशु-
मारः स्तः हय एवं वेदाप पुनर्मृत्युं जयति जयति स्वर्गलोकं नाध्वनिप्रमीयते नाग्नौ-
प्रमीयते नाप्सु प्रमीयते नानपत्यः प्रमीयते लघ्वान्नो भवति ध्रुवस्त्वमसि ध्रुवस्य-
क्षितमसित्वं भूतानामधिपतिरसित्वं भूतानां श्रेष्ठो सित्वां भूतान्युपपर्यावर्तते नम
स्ते नमः सर्वे ते नमो नमः शिशुकुमाराय नमः १९ नमः प्राच्यै दिशेया श्रदेवता एत
स्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च नमो नमो दक्षिणायै दिशेया श्रदेवता एतस्यां प्रतिवसंत्ये
ताभ्यश्च नमो नमः प्रतीच्यै दिशेया श्रदेवता एतस्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च नमो नम
उदीच्यै दिशेया श्रदेवता एतस्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च नमो नम ऊर्ध्वायै दिशेया श्र

स०

१७

देवता एतस्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च नमोनमो धरायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रति
 वसंत्येताभ्यश्च नमोनमो वांतरायै दिशेयाश्च देवता एतस्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च न
 मो नमो गंगाय मुनयोर्मध्ये ये वसंतिते मे प्रसन्नात्मानश्चिरं जीवितं वर्द्धयन्ति नमो गं-
 गाय मुनयोर्मुनिभ्यश्च नमोनमो गंगाय मुनयोर्मुनिभ्यश्च नमः । सहस्रक्षा * सियद्दे-
 वाः सप्तदशयददीव्यं पंचदशायुष्टे चतुस्त्रिंशद्द्वैश्वानराय षड्विंशतिर्वातरशना
 हकुशमांडैरजान्ह पंचब्रह्मयज्ञेन ग्रामैर्मध्यादिने तस्य वै मेघस्तस्य वै द्वौ रिच्यते दुहेहं
 कतिधा वं कीर्णीभू नमः प्राच्यैयि * श्रुतिः सहस्रब्रह्मयज्ञेन वि * श्रुतिः २० नमो ब्रह्म-
 णे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमो ओषधीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो वि-
 ष्णवे बृहते करोमि । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । । इति सहस्रै उपनिषदसंपूर्ण ० ॥
 । अथ शिक्षोपनिषत् । श्रीगणेश ० । शन्नो मित्रशंवरुणः । शन्नो भवत्वयमा । शन्नं
 द्रो बृहस्पतिः । शन्नो विष्णु रुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मा

सि । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामं व
तु । तद्वक्तारं मवतु । अवतु मां । अवतु वक्तारं । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । ॐ शीक्षां
व्याख्यास्यामः । वर्णस्वरः । मात्राबलं । सामसंतानः । इत्युक्तः शीक्षाध्यायः १ शी
क्षापंचा १ सहनौयशः । सहनौ ब्रह्मवर्चसं । अथातः संहिताया उपनिषदं व्याख्या
स्यामः । पंचस्वधिकरणेषु । अधिलोकमधिज्यौतिषमधिविद्यमधिप्रजमध्यात्मं ।
तामहासंहिता इत्याचक्षते । अथाधिलोकं । पृथिवीपूर्वरूपं । द्यौरुत्तररूपं । आ
काशः संधिः १ वायुः संधानं । इत्यधिलोकं । अथाधिज्यौतिषं । अग्निः पूर्वरूपं ।
आदित्य उत्तररूपं । आपः संधिः । वैद्युतः संधानं । इत्यधिज्यौतिषं । अथाधिविद्यं ।
आचार्यः पूर्वरूपं २ अंतेवास्युत्तररूपं । विद्यासंधिः । प्रवचनसंधानं । इत्यधि
विद्यं । अथाधिप्रजं । माता पूर्वरूपं । पितोत्तररूपं । प्रजासंधिः । प्रजनसंधानं ।
इत्यधिप्रजं ३ अथाध्यात्मं । अधराहनुः । पूर्वरूपं । उत्तराहनुरुत्तररूपं । वाक् संधिः

शि.
१८

। जिह्वासंधानं । इत्यध्यात्मं । इतिमामहासंहिताः । यएवमेतामहासंहिताव्याख्यातावेदः । संधीयतेप्रजयापशुभिः । ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येनसुवर्गैर्णलोकेन ४संधिराचार्यःपूर्वरूपमित्यधिप्रजंलोकेन २ यश्छंदसामृषभोविश्वरूपः । छंदोभ्योध्यमृतात्संबभूव । समेद्रोमेधयास्पृणोतु । अमृतस्यदेवधारणोभूयासं । शरीरंमेविचर्षणं । जिह्वामधुमत्तमा । कर्णाभ्यांभूरीविश्रुवं । ब्रह्मणःकोशोसि । मेधयापिहितः । श्रुतंमैगोपाय । आवहंतीवितन्वाना १ कुर्वाणाचीरमात्मनः । वासांसिममगावश्च । अन्नपानेचसर्वदा । ततोमेश्रियमावह । लोमशांपशुभिःसहस्वाहा । आमायंतुब्रह्मचारिणःस्वाहा । विमायंतुब्रह्मचारिणःस्वाहा । प्रमायंतुब्रह्मचारिणःस्वाहा । दमायंतुब्रह्मचारिणःस्वाहा । शमायंतुब्रह्मचारिणःस्वाहा २ यशोजनेसानिःस्वाहा । श्रेयान्वख्यंसोसानिस्वाहा । तंत्वाभगप्रविशानिःस्वाहा । समाभगप्रविशस्वाहा । तस्मिन्सहस्रंशाखे । निभंगाहंत्वयिमृजेस्वाहा । यथापुःप्रवता-

३०

१८

यंति । यथामासां अहर्जरं । एवंमां ब्रम्हचारिणः । धातुरायंतु सर्वतः स्वाहा । प्रतिवे
शोसि प्रमां भाहि प्रमां पद्यस्व ३ वितन्वानाश्मां यंतु ब्रम्हचारिणः स्वाहा धातुरा-
यंतु सर्वतः स्वाहे कंच ३ भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्ति स्त्रो व्याहृतयः । तासां मुहस्मै-
तां चतुर्थी । माहा चमस्यः प्रवेदयते मह इति । तत् ब्रम्हा । स आत्मा । अंगान्यन्या
देवताः । भूरिति वा अयं लोकः । भुवः इत्यंतरिक्षं । सुवरित्यसौ लोकः १ मह इत्यादि
त्यः । आदित्येन वा सर्वे लोकामहीयंते । भूरिति वा अग्निः । भुव इति वायुः । सुवरि
त्यादित्यः । मह इति चंद्रमाः । चंद्रमसा वा सर्वे णि ज्योतीः ऋषि महीयंते । भूरिति
वा ऋचः । भुव इति सामानि । सुवरिति यजूंषि २ मह इति ब्रह्म । ब्रम्हणा वा सर्वे
वे वेदामहीयंते । भूरिति वै प्राणः । भुव इत्यपानः । सुवरिति व्यानः । मह इत्यन्नं । अ
न्नैः न वा सर्वे प्राणामहीयंते । तावा एताश्च तस्त्रो व्याहृतयः । च तस्त्रो व्याहृतयः
। ता यो वेद । सर्वे द्ब्रह्म । सर्वे स्मै देवा ब्रलिमा ब्रह्मंति ३ असौ लोको यजूंषि वेद द्वे-

शि.
१९

च ४ सयएषोतरहृदयआकाशः । तस्मिन्नयंपुरुषोमनोमयः । अमृतोहिरण्मयः ।
अंतरेणतालुके । यएषस्तनइवावलंबते । सैद्रयोनिः । यत्रासौकेशांतोविवर्तते ।
व्यपोह्यशीर्षकपाले । भूरित्यग्नौप्रतितिष्ठति । भुवइतिवायौ १ सुवरित्यादित्ये ।
महइतिब्रह्मणि । आप्नोतिःस्वारास्यं । आप्नोतिमनसःस्पतिं । वाक्पतिश्चक्षुष्प
तिः । श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः । एतत्ततोभवति । आकाशशरीरंब्रह्म । सत्यात्मप्रा
णारामंमनआनंदं । शांतिसमृद्धममृतं । इतिप्राचीनयोग्योपास्वा २ वायावमृ
तमेकैच ५ पृथिव्यंतरीक्षंद्यौर्दिशोवांतरदिशाः । अग्निर्वायुरादित्यश्चंद्रमानक्षत्रा
णि । आपओषधयोवनस्पतयआकाशआत्मा । इत्यधिभूतं । अथाध्यात्मं । प्रा
णोव्यानोपानउदानःसमानः । चक्षुश्रोत्रंमनोवाक्त्वक् । चर्ममांस * स्नावा
स्थिमज्जा । एतदधिविधायऋषिरवोचत् । पांक्तंवाइद*सर्वं । पांङ्गेनैवपाङ्ग *
स्पृणोतीति १ सर्वमेकैच ६ ॐ मितिब्रह्म । ॐमितीद*सर्वं । ओमित्येतदनुकृ

तिहस्मवाअप्योश्चावयेत्याश्चावयंति । ॐ मितिसामानिगायंति । ॐ * शोमिति
शस्त्राणिश * संति । ॐ मित्यंध्वर्युःप्रतिगरंप्रतिगृह्णाति । ॐ मितिब्रम्हाप्रमो
ति । ॐ मित्यग्निहोत्रमनुजानाति ॐ मितिब्राम्हणःप्रवक्ष्यन्नाहब्रह्मोप्राप्नवानो-
ति । ब्रम्हैवोप्राप्नोति १ ॐ दश ७ ऋतंचस्वाध्यायप्रवचनेच । सत्यंचस्वाध्या-
यप्रवचनेच । तपश्चस्वाध्यायप्रवचनेच । दमश्चस्वाध्यायप्रवचनेच । शमश्चस्वा
ध्यायप्रवचनेच । आश्रयश्चस्वाध्यायप्रवचनेच । अग्निहोत्रंचस्वाध्यायप्रवचनेच
। अतिथयश्चस्वाध्यायप्रवचनेच । मानुषंचस्वाध्यायप्रवचनेच । प्रजाचस्वाध्या
यप्रवचनेच । प्रजनश्चस्वाध्यायप्रवचनेच । प्रजातिश्चस्वाध्यायप्रवचनेच । स-
त्यमितिसत्यवचाराथीतरः । तपइतितपोनित्यः पौरुशिष्टिः । स्वाध्यायप्रवचने-
एवेतिनाकोमौहूल्य । तद्धितपस्तद्धितपः १ प्रजाचस्वाध्यायप्रवचनेचषट्च
१० अहंवृक्षस्युरेरिव । कीर्तिःपृष्ठंगिरेरिव । ऊर्ध्वपवित्रोवाजिनविस्वमृतमस्मि ।

शि.
२०

द्रविण*सर्वचसं । सुमेधाअमृतोक्षितः । इतित्रिशंकोर्वेदानुवचनं १ अह*षट् ।
वेदमनूच्याचार्योतेवासिनमनुशास्ति । सत्यंवद । धर्मचर । स्वाध्यायान्माप्रमद
। आचार्यायप्रियंधनमाहृत्यप्रजातंतुमाव्यवच्छेत्सीः । सत्यान्नप्रमदितव्याधर्मा
न्नप्रमदितव्यं । कुशलान्नप्रमदितव्यं । भृत्यैः न प्रमदितव्यं । स्वाध्यायप्रवचनाभ्या
न्नप्रमदितव्यं १ देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यं । मातृदेवोभव । पितृदेवोभव ।
आचार्यदेवोभव । अतिथिदेवोभव । यान्यनवद्यानिकर्माणि । तानिसेवितव्यानि-
नोइतराणि । यान्यस्माक*सुचरितानि । तानित्वयोपास्यानि २ नोइतराणि । येके
चास्मच्छ्रेया*सोब्राह्मणाः । तेषांत्वयासनेनप्रश्वंसितव्यं । श्रद्धयादेयं । अश्रद्ध
यादेयं । श्रियादेयं । हिंयादेयं । भियादेयं । संविदादेयं । अथयदितेकर्मविचिकित्सा
वावृत्तविचिकित्सावास्यात् ३ येतत्रब्राह्मणाः संमर्शिनः युक्ता आयुक्तः । अलूक्षा
धर्मकामाः स्युः । यथातैतत्रवर्तेरन् । तथातत्रवर्तेथाः । अथाभ्याख्यातेषु । येतत्र

उ०

२०

ब्राह्मणाःसंमर्शिनः । युक्ताआयुक्ताः । अलूक्षाधर्मकामास्युः । यथातेतेषुवर्तेरन् ।
तथातेषुवर्तेथाः । एषआदेशः । एषउपदेशः । एषावेदोपनिषत् । एतदनुशासनं-
एवमुपासितव्यं । एवमुच्चैतदुपास्यं ४ स्वाध्यायप्रवचनाभ्यान्नप्रमदितव्यंतानि
त्वयोपास्यानिस्यात्तेषुवर्तेरन्सप्तच १० शन्नोमित्रःशंवरुणः । शन्नोभवत्वर्यमा ।
शन्नइन्द्रोबृहस्पतिः । शन्नोविष्णुरुरुक्रमः । नमोब्रह्मणे । नमस्तेवायो । त्वमेवप्रत्य
क्षंब्रह्मासि । त्वामेवप्रत्यक्षंब्रह्मावादिषं । ऋतमवादिषं । सत्यमवादिषं । तन्मामा
वीत् । तद्वक्तारमावीत् । आवीन्मां । आवीद्वक्तारं । ॐ शांतिःशांतिःशांतिः । ६५ ।
। अथब्रह्मविदोपनिषत्प्रारंभ । श्रीगणेशायनमः । हरिःॐ । सहनाववतु । सह-
नोभुनक्तु । सहवीर्यंकरवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै । ॐ शांतिः
शांतिःशांतिः । हरिॐब्रह्मविदाप्नोतिपरं । तदेषाभ्युक्ता । सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ।
योवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्न । सोश्रुतेसर्वान्कामान्त्सह । ब्रह्मणाविपश्चि

तेति । तस्माद्वाएतस्मादात्मन आकाशः संभूतः । आकाशाद्वायुः । वायोरग्निः ।
 अग्नेरापः । अद्भ्यः पृथिवी । पृथिव्या ओषधयः । ओषधीभ्योन्न । अन्नात्पुरुषः । स-
 वाएषपुरुषोन्नरसमयः । तस्येदमेवशिरः । अयंदक्षिणः पक्षः । अयमुत्तरः पक्षः ।
 अयमात्मा । इदंपुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति १ अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायंते । याः
 काश्च पृथिवीश्च श्रिताः । अथो अन्नै नैव जीवंति । अथैनदपियं त्यंततः । अन्नं हि भू-
 तानां ज्येष्ठं । तस्मात्सर्वोषधमुच्यते । सर्वे वै तेन्नमाप्नुवंति । येन्नं ब्रम्होपासते । अ-
 न्नं हि भूतानां ज्येष्ठं । तस्मात्सर्वोषधमुच्यते । अन्नाद्भूतानि जायंते । जातान्येन्न न
 वर्द्धन्ते । अद्यतेति च भूतानि । तस्मादन्नं तदुच्यत इति । तस्माद्वाएतस्मादन्नरसम-
 यात् । अन्योत्तरात्मा प्राणमयः । तेनैष पूर्णः । सवाएषपुरुषविधएव । तस्यपुरु-
 षविधतां । अन्वयं पुरुषविधः । तस्य प्राण एव शिरः । व्यानो दक्षिणः पक्षः । अपान
 उत्तरः पक्षः । आकाश आत्मा । पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति २ प्रा-

गंदेवाअनुप्राणंति । मनुष्याःपशवश्चये । प्राणोहिभूतानामायुः । तस्मात्सर्वायु-
षमुच्यते । सर्वमेवतआयुर्यति । येप्राणंब्रम्होपासते । प्राणोहिभूतानामायुः । त-
स्मात्सर्वायुषमुच्यतइति । तस्यैषएवशारीरआत्मा । यःपूर्वस्य । तस्माद्वाएतस्मां
त्प्राणमयात् । अन्योतरआत्मानमनोमयः । तेनैषपूर्णः । सवाएषपुरुषविधएव । त-
स्यपुरुषविधतां । अन्वयंपुरुषविधः । तस्ययजुरेवशिरः । ऋग्दक्षिणःपक्षः । सा
मोत्तरःपक्षः । ओद्देशआत्मा । अथर्वागिरसःपुच्छंप्रतिष्ठा । तदप्येषश्लोकोभवति
३ यतोवाचोनिवर्तते । अप्राप्यमनसासह । आनंदंब्रह्मणोविद्वान् । नबिभेतिक-
दाचनेति । तस्यैषएवशारीरआत्मा । यःपूर्वस्य । तस्माद्वाएतस्मान्मनोमयात् ।
अन्योतरआत्माविज्ञानमयः । तेनैषपूर्णः । सवाएषपुरुषविधएव । तस्यपुरुषवि-
धतां । अन्वयंपुरुषविधः । तस्यश्रद्धैवशिरः । ऋतंदक्षिणःपक्षः । सत्यमुत्तरःपक्षः ।
योगआत्मा । महःपुच्छंप्रतिष्ठा । तदप्येषश्लोकोभवति ४ विज्ञानंयज्ञंतनुते । कर्मा

णितनुतोपिच । विज्ञानं देवाः सर्वे । ब्रम्हज्येष्ठमुपासते । विज्ञानं ब्रम्ह चेद्वेद । तस्मा
 चन्न प्रमाद्यति । शरीरं पाप्मनो हित्वा । सर्वान् कामान् समश्नुत इति । तस्यैष एव
 शरीर आत्मा । यः पूर्वस्य । तस्माद्वा एतस्मादिज्ञानमयात् । अन्योतर आत्मानन्द-
 मयः । तेनैष पूर्णः । स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुषविधतां । अन्वयं पुरुषविधः ।
 तस्य प्रियमेव शिरः । मोदोदक्षिणः पक्षः । प्रमोद उत्तरः पक्षः । आनन्द आत्मा । ब्रह्म
 पुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति ५ असन्नेव संभवति । असद्ब्रह्मेति वेदचेत् । अ-
 स्ति ब्रह्मेति चेद्वेद । संतमेन ततो विदुरिति । तस्यैष एव शरीर आत्मा । यः पूर्वस्यः ।
 अथातो नु प्रश्नाः । उता विद्वान्मुं लोकं प्रेत्य । कश्च न गच्छती ३ आहो विद्वान्मुं लो-
 कं प्रेत्य । कश्चित्समश्नुता ३३ । सो कामयत । बहुस्यां प्रजायेयेति । स तपो तप्यत ।
 स तपस्तप्त्वा । इदं सर्वं मम सृजत । यदिदं किंच । तत्सृष्ट्वा । तदेवानु प्राविशत् । त-
 दनु प्रविश्य । सच्चत्यवद्या भवत् । निरुक्तं चानिरुक्तं च । निलयनं चानिलयनं च ।

विज्ञानं विज्ञानं च । सत्यं चानृतं च सत्यमभवत् । यदिदं किंच । तत्सत्यमित्याच-
क्षते । तदप्येष श्लोको भवति ६ असद्वा इदमग्रं आसीत् । ततो वै सदजायत । त-
दात्मानं स्वयं मकुरुत । तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते इति । यद्वै तत्सुकृतं । रसो वै सः ।
रसः * ह्येवायं लब्ध्वानंदी भवति । को ह्येवान्यात्कः प्राण्यात् । यदेष आकाश आनं-
दो न स्यात् । एष ह्येवानंदयाति । यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येनात्मेनिरुक्तेनिलयने
भयं प्रतिष्ठां विंदते । अथ सो भयं गतो भवति । यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमंतं रं कुरुते
अथ तस्य भयं भवति । तत्त्वेव भयं विदुषो मन्वानस्य । तदप्येष श्लोको भवति ८
भीषात्स्माद्वातः पवते । भीषो देति सूर्यः । भीषास्मादग्निश्चंद्रश्च । मृत्युर्धावति पंच-
म इति । सैषानंदस्य मीमांसा भवति । युवा स्यात्साधुयुवाध्यायकः । आशिष्ठो दृ-
ढिष्ठो बलिष्ठः । तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् । स एको मानुष आनंदः । ते
येशतं मानुषा आनंदाः १ स एको मनुष्यगंधर्वाणामानंदः । श्रीत्रियस्य चाकामह

ब्र०
२३

तस्यातेयेशतमनुष्यगंधर्वाणामानंदः। सएकोदेवगंधर्वाणामानंदः। श्रोत्रियस्य
चाकामहतस्य। तेयेशतंदेवगंधर्वाणामानंदः। सएकःपितृणांचिरलोकलोकामा
नंदः। श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंपितृणांचिरलोकलोकानामानंदः।
सएकआजानजानांदेवानामानंदः २ श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतमा
जानजानांदेवानामानंदः। सएकःकर्मदेवानांदेवानामानंदः। येकर्मणादेवानं
पियंति। श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंकर्मदेवानांदेवानामानंदः। सए
कोदेवानामानंदः। श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंदेवानामानंदः। सएकइं
द्रस्यानंदः ३ श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतमिंद्रस्यानंदः। सएकोबृहस्पतै
रानंदः। श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंबृहस्पतैरानंदः। सएकःप्रजापतै
रानंदः। श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंप्रजापतैरानंदः। सएकोब्रह्मणआ
नंदः। श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य ४ सयश्चायंपुरुषे। यश्चासांवादित्ये। सएकः।

उ०

२३

सयएवंवित् । अस्माल्लोकात्प्रेत्य । एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामति । एतंप्राण
मयमात्मानमुपसंक्रामयति । एतमनोमयमात्मानमुपसंक्रामति । एतंविज्ञानम-
यमात्मानमुपसंक्रामति । एतमानंदमयमात्मानमुपसंक्रामति । तदप्येषश्चोकोभु-
वति ८ यतोवाचोनिवर्तते । अप्राप्यमनसासह । आनंदं ब्रह्मणो विद्वान् । न विभे-
तिकुतश्चनेति । एत *हवावनतपति । किमह* साधुनाकरवं । किमहंपापमकरं व-
मिति । । सयएवंविद्वानेते आत्मानं *स्पृणुते । उभेह्यैवैषयेते आत्मानं *स्पृणुते । य-
एवंवेद । इत्युपनिषत् ९ सहनाववतु । सहनौभुनक्तु । सहवीर्यंकरवावहै । तेज-
स्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । इति तैत्तिरिय ब्रह्मवि-
दोपनिषत्समाप्तिमगमत् । ब्रह्मविदिदमयमिदमेकवि*शतिरन्नादरसमयात् । प्रा-
णाव्यानोपानाकाशः पृथिवीपुच्छ*षड्वि*शतिः प्रणयजुः ऋक्सामादेशोथर्वा-
गीरसः पुच्छं द्वावि*शतिर्यतः । श्रद्धर्त*सत्ययोगो महोष्ठादशविज्ञानां प्रियं मोद-

५०
२४

आनंदो ब्रह्मपुच्छं द्वावि* शतिरसन्नेवाथाष्टावि* शतिरसषोडशभीषास्मादेकपं-
चाशद्यतः । कुतश्च नैकादश । लोकः सरस्वत्यायां त्रैषवे देवयानः पन्थास्तमेवान्वा-
रोहं त्याक्रोशं तोयां त्यवर्तिमेवाऽन्यस्मिन् प्रतिषज्य प्रतिष्ठांगच्छंति यदा दशशतं-
कुर्वन्त्यथैकमुत्थानं* शतायुः पुरुषः शतैर्द्रिय आयुष्ये वै द्रिये प्रतितिष्ठंति यदा श*स-
हस्रं कुर्वन्त्यथैकमुत्थानं* सहस्रं सम्मिता वा असौ लोको मुमेव लोकमभिजयंति यदै-
षां प्रमीयेत यदा वा जीयेरन्नथैकमुत्थानं तद्वितीर्थं १ भृगूपनिषत्प्रा० । श्रीगणेशा-
य० । हरिॐ । सह नाववतु । सह नाभुनक्तु । सह वीर्यं करवावहैते जस्विनावधीतम-
स्तु माविद्विषावहै । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । ॐ भृगुर्वै वारुणिः । वरुणं पितरमुपस-
सार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । तस्मै एतत्प्रोवाच । अन्नं प्राणं चक्षुश्चोत्रं मनो वाच-
मिति । त*हो वाच । यतो वा इमानि भूतानि जायंते । येन जातानि जीवन्ति । यत्प्रयै-
त्यभिसंविशन्ति । तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति । स तपो तप्यत । स तपः स्तप्त्वा १ अ-

मंत्रब्रह्मेतिव्यजानात् । अन्नाद्यैवखल्विमानिभूतानिजायंते । अन्नंनजातानिजीवं
ति । अन्नंप्रयंत्यभिसंविशंतीतिताद्विज्ञाय । पुनरेववरुणंपितरमुपससार । अधीहि
भगवोब्रह्मेति । त*होवाच । तपसाब्रम्हविजिज्ञासस्व । तपोब्रह्मेति । सतपोतप्यत
सतपस्तप्त्वा २ प्राणोब्रह्मेतिव्यजानात् । प्राणाध्यैवखल्विमानिभूतानिजायंते । प्रा
णेनजातानिजीवंतिप्राणंप्रयंत्यभिसंविशंतीति । तद्विज्ञाय । पुनरेववरुणंपितरमुप
ससार । अधीहिभगवोब्रह्मेति । त*होवाच । तपसाब्रम्हविजिज्ञासस्व । तपोब्रह्मेति
सतपोतप्यत । सतपस्तप्त्वा ३ मनोब्रह्मेतिव्यजानात् । मनसोह्यैवखल्विमानिभू
तानिजायंते । मनसाजातानिजीवंति । मनःप्रयंत्यभिसंविशंतीतिताद्विज्ञाय । पुनरे
ववरुणंपितरमुपससार । अधीहिभगवोब्रह्मेति । त*होवाच । तपसाब्रम्हविजिज्ञा
सस्वातपोब्रह्मेति । सतपोतप्यत । सतपस्तप्त्वा ४ विज्ञानंब्रह्मेतिव्यजानात् । विज्ञा
नाद्यैवखल्विमानिभूतानिजायंते । विज्ञानेनजातानिजीवंति । विज्ञानंप्रयंत्यभिसं

विशंतीति । तद्विज्ञाय । पुनरेववरुणं पितरमुपससार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । त
होवाच । तपसा ब्रह्मविजिज्ञामस्व । तपो ब्रह्मेति । सतपो तप्यत । सतपस्तप्त्वा
आनंदो ब्रह्मेति व्यजानात् । आनंदाच्चैव खल्विमानि भूतानि जायंते । आनंदेन जा
नानि जीवति । आनंदं प्रयंत्यभिसंविशंतीति । सैषा भार्गवी वारुणी विद्या । परमे
व्योमन् प्रतिष्ठिता । य एवं वेद प्रतिष्ठति । अन्नं वा न न्नादो भवति । महान् भवति प्र
जया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन । महान् कीर्त्या ६ अन्नं न निंद्यात् । तद्वत् । प्राणो वा अन्नं ।
शरीरमन्नादं । प्राणेशरीरं प्रतिष्ठितं । शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः । तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठि
तं । स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेदं प्रतिष्ठति । अन्नं वा न न्नादो भवति । महान् भव
ति । प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन । महान् कीर्त्या ७ अन्नं न परिचक्षीत् । तद्वत् । आ
पो वा अन्नं । ज्योतिरन्नादं । अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितं । ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः । तदे
तदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं । स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेदं प्रतिष्ठति । अन्नं वा न न्नादो भ

वति । महान्भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन । महान्कीर्त्या ८ अन्नं बहु कुर्वीत ।
 तद्वृतं । पृथिवी वा अन्नं । आकाशो न्नादः । पृथिव्या माकाशः प्रतिष्ठितः । आकाशे पृ
 थिवी प्रतिष्ठिता । तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् । स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतिष्ठि
 ति । अन्नं वानन्नादो भवति । महान्भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन । महान्कीर्त्या
 ९ न कंचन वसतौ प्रत्याचक्षीत । तद्वृतम् । तस्माद्यया कया च विधया बह्वन्नं प्राप्नुया
 त् । अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते । एतद्वै मुखतोन्नराद्धं । मुखतोस्मा अन्नरा
 ध्यते । एतद्वै मध्यतोन्नराद्धं । मध्यतोस्मा अन्नराध्यते । एतद्वा अंततोन्नराद्धं । अं
 ततोस्मा अन्नराध्यते १ य एवं वेद । क्षेम इति वाचि । योगक्षेम इति प्राणापानयोः ।
 कर्मैति हस्तयोः । गतिरिति पादयोः । विमुक्तिरिति पायौ । इति मानुषीः समाज्ञाः ।
 अथ दैवीः । तृप्तिरिति वृष्टौ । बलमिति विद्युति २ यश इति पशुषु । ज्योतिरिति न-
 क्षत्रेषु । प्रजातिरमृतमानंद इत्युपस्थे । सर्वमित्याकाशे । तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत ।

प्रतिष्ठावान्भवति । तन्महद्व्युपासीत । महान्भवति । तन्मनद्व्युपासीत । मान्
 वान्भवति ३ तन्नमद्व्युपासीत । नम्यंतेस्मैकामाः । तद्ब्रह्मेत्युपासीत ब्रह्मवान्भव
 ति । तद्ब्रह्मणः परिमरद्व्युपासीत । पर्येणंघियंतेद्विषंतः सपत्नाः । परियेप्रियाभ्रातृ
 व्याः । सयश्चायंपुरुषे । यश्चासावादित्ये । स एकः ४ सय एवंवित् । अस्माल्लोकात्प्रे-
 त्य । एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रम्य । एतंप्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्य । एतंमनो
 मयमात्मानमुपसंक्रम्य । एतंविज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रम्य । एतमानंदमयमा-
 त्मानमुपसंक्रम्य । इमाँल्लोकान्कामान्नीकामरूप्यंनुसंचरन् । एतत्सामगायन्नास्ते
 । हा ३ वुहा ३ वुहा ३ वु । अहमन्नमहमन्नमहमन्नं । अहमन्नादो ३ ओहमन्नादो ३ ओ
 हमन्नादः । अह*श्लोककृदह*श्लोककृदद*श्लोककृत् । अहमस्मिप्रथमजाकृता ३
 स्यु । पूर्वदेवेभ्योअमृतस्यना ३ भायि । योमाददातिसङ्देवमा ३ वाह । अहमन्नम
 न्नमदंतमा ३ मि । अहंविश्वंभुवंनमभ्यंभवां । सुवर्नज्योतीः । यएवंवेद । इत्युपनि

षत् । सहनाववतु । सहनौभुनक्तु । सहवीर्यैकरवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तुमा
विद्विषावहै ॐ शांतिः शांतिः शांतिः भृगुस्तस्मै यतो विकृतितद्विजिज्ञासस्व । त्रयो
दशान्नं प्राणो मनो विज्ञानमिति । यिज्ञायतंतपसा द्वादशानंद इति । सेषा दशान्नं
निद्यात् । प्राणः शरीरमन्नं परिचक्षीतापो ज्योतिरन्नं । बहु कुर्वीत पृथिव्यामाकाश
एकादशैकादशनकंचनैकषष्टिर्दश । इति तैत्तिरीयेते भृगूपनिषत्संपूर्णः ॥ ६५ ॥
नारायण उपनिषत्प्रारंभः । श्रीगणेशं वंदे । ॐ सहनाववतु । सहनौभुनक्तु । सह
वीर्यैकरवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तुमा विद्विषावहै । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।
अंभस्य पारे भुवनस्य मध्ये नाकस्य पृष्ठे महतो महीयान् । शुक्रेण ज्योती * पिसमनु-
प्रविष्टः प्रजापतिश्चरति गर्भे अंतः । यस्मिन्निद * संच विचैति सर्वं यस्मिन् देवा अ-
धिविश्वे निषेदुः । तदेव भूतं तदुभयमाह दंतदक्षरे परमेव्योमन् । येनावृतं खंचदि
वैमही च येनादित्यस्तपति तेजसा भ्राजसा च । यमंतः समुद्रे कवयो वयं तियदक्षरे प

ना.

२७

रमे प्रजाः । यतः प्रसूता जगतः प्रसूती तोयेन जीवान् व्यचसर्ज भूम्या । यदोषधी-
 भिः पुरुषान् पशून् च विवेश भूतानि चराचराणि । अतः परज्ञान्यदणीयस * हिपरां
 त्परं यन्महं तोमहांतं । यदेकमव्यक्तमनंतरूपं विश्वं पुराणं तमसः परस्तात् १ तदे-
 वर्तत दुस्त्यमा हस्तदेव ब्रह्म परमं कवीनां । इष्टा पूर्त बंधुधा जातं जायमानं विश्वं वि-
 भर्ति भुवनस्य नाभिः । तदेवाभिस्तद्वायुस्तत्सूर्यः स्तदुचंद्रमाः । तदेव शुक्रममृतं-
 तब्रह्मतदापः स प्रजापतिः । सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषा दधि । कलामुहूर्ताः
 काष्ठाश्चाहोरात्राश्च सर्वशः । अर्धमासामासा ऋतवः संवत्सरश्च कल्पतां । स अपः
 प्रदुधे उभे इमे अंतरीक्षमथो सुवः । नैनमुर्ध्वं नतिर्यचं न मध्ये परीजग्रभत् । न तस्यै-
 शोकश्च न तस्य नाम महद्यशः २ न संदृशेतिष्ठति रूपं मस्य न चक्षुषा पश्यति कश्च नैनं
 हृदामनीषामनसा भिक्नुतो य एनं विदुरमृतास्ते भवंति । अद्भ्यः संभूतो हिरण्यगर्भ इ-
 त्यष्टौ । एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातः स उगर्भ अंतः । स विजायमानः स-

जनिष्यमाणः प्रत्यङ्मुखोऽस्ति षट्तिविश्वतो मुखः । विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो-
विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात् । संबाहुभ्यां नमस्ति संपतत्रैर्द्यावा पृथिवी जनयं देव
एकः । वेनस्तत्पश्यन् विश्वा भुवनानि विद्वान्यत्र विश्वं भवत्यकनीलं । यस्मिन्निद-
संच विचैकस्य ओतः प्रोतश्च विभु प्रजासु । प्रतद्वोचे अमृतं नु विद्वान् गधर्वो नाम
निहितं गुहासु ३ त्रीणि पदानि हिता गुहासु यस्तद्वेदं सवितुः पिता सत् । स नो बंधुज
निता सविधा ता धामा निवेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतं मानशानाः स्तृतीये धा-
मान्यभ्यै रयंत । परिद्यावा पृथिवी यांति सद्यः । परिलोकान् परिदिशः परिसुवः । ऋत-
स्य तंतुं विततं विचृत्य तदपश्यत दं भवत् प्रजासु । परीत्य लोकान् परीत्य भूतानि परी-
त्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च । प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्यात्मना त्मानं मभिसंबभूव ।
सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिंद्रस्य काम्यं । सनिमेधामया सिषं । उद्दीप्य स्वजातवेदो-
पघ्नं निऋतिं मम ४ पशूश्च मह्यमावह्य जीवं न च दिशो दिश । मानो हि सीज्जातवे

दोगामश्चंपुरुषं जगत् । अविभ्रदग्न आगहि श्रियामापरिपातय । पुरुषस्याविद्भस-
 हस्राक्षस्य महादेवस्य धीमही । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । तत्पुरुषाय विद्महे महादेवा
 यं धीमही । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुंडाय धीमही ५ तन्नो दं-
 तिः प्रचोदयात् । तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुंडाय धीमही । तन्नो नंदिः प्रचोदयात् । त-
 त्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि । तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् । तत्पुरुषाय विद्महे
 सुवर्णपक्षाय धीमहि । तन्नो गरुडः प्रचोदयात् । वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय
 धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् । नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः
 प्रचोदयात् । वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि ६ तन्नो नारासिंहः प्रचोद-
 यात् । भास्कराय विद्महे महद्युतिकराय धीमहि । तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् । वैश्वा-
 नराय विद्महे लालीलाय धीमहि । तन्नो अग्निः प्रचोदयात् । कात्यायनाय विद्महे क-
 न्यकुमारीय धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् । सहस्रपरमा देवी शतमूला । शतांकुरा

सर्वं हरतु मे पापं दुर्वादुस्वप्ननाशिनी । कांडात्कांडात्प्ररोहंती परुषपरुषः परी ७
एवानोदूर्ध्वं प्रतनु सहस्रेण शतेन च । या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहासि । तस्या
स्ते देवीष्टके विधेम ह्यविषावयं । अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुंधरा । शिरसा धा
रं दृष्यामिरक्षस्व मां पदे पदे । भूमिर्धेनूर्धरणी लोकधारिणी । उधृतां सिवराहेण कृष्णे
न शतबाहुना । मृत्तिकैर्ह न मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतं । मृत्तिकैर्ब्रह्मदत्तासि काश्यपे
नाभिमां त्रिता । मृत्तिकैर्देहि मे पुष्टित्वयि सर्वं प्रतिष्ठितं ८ मृत्तिकैर्प्रतिष्ठिते सर्वे तन्मे
निर्णुद मृत्तिके । तया ह तेन पापेन गच्छामि परमां गतिं । यत इन्द्र भयां महेततो नो अ
भयं कृधि । मघवंच्छुग्धितव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि । स्वस्ति दा विश-
स्पतिर्दद्वहा विमृधो वशी । वृषेन्द्रः पुरा तु नः । स्वस्ति दा अभयं करः । स्वस्ति न इन्द्रो
वृद्धश्रवा स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति न स्ताक्षर्यो अरीष्टनेमिः स्वस्ति नो बृह-
स्पतिर्दधातु । आपां तमन्मुस्तृपलं प्रभर्मा धुनिः शर्मा वांछरुमा ऋजीषी । सोमो-

ना. २९ विश्वान्यतसावनानि नार्वा । गिंद्रप्रतिमानानि देभुः ९ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता-
 द्विसीमितः सुरुचो वेन आवः । सबुधिया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च वि-
 वः । स्योना पृथिवि भवानृक्षरानि वेशनी । यछानः शर्मसु प्रथाः । गंधद्वारांदुराधर्षी
 नित्यपुष्टांकरीषिणी । इश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपबहये श्रियं । श्रीर्मे भजतु । अ-
 लक्ष्मीर्मे नश्यतु । विष्णुमुखा वै देवाश्छंदोभिरीमांल्लोकानं न पजय्यमभ्यजयन् । म-
 हा इन्द्रो वज्रबाहुः षोडशी शर्मयच्छतु १० स्वस्ति नो मघवां करोतु हंतु पाप्मानं यो
 स्मांद्वेष्टि । सोमान् स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कक्षीवैतं य औशिजं । शरीरं यज्ञश-
 मलंकुसीदंतस्मिन्सीदतु योस्मांद्वेष्टि । चरणं पवित्रं वितंतं पुराणं येन पूतः स्तरं ति-
 दुष्कृतानि । तेन पवित्रेण शुद्धेन पूता अतिपाप्मानमरातिं तरेम । स जोषा इन्द्रसग-
 णो मरुद्भिः सोमं पिबवृत्रहं च छूरविद्वान् । जहि शत्रून् रपमृधौ नुद स्वाथाभयं कृणुहि-
 विश्वतो नः । सुमित्रान् आप ओषधयः संतु दुर्मित्रास्तस्मै भूया सूर्योस्मांद्वेष्टियं च व-

यां द्विष्मः । आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन ११ महेरणा यचक्षसे । यो वशिव
तमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरीवमातरः । तस्मा अरंगमामवो यस्य क्षया
यजिन्वथ । आपो जनयथाचनः । हिरण्यशृंगं वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे देहियाचितः । य
न्मया भुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः । यन्मे मनसा वाचा कर्मणा वा दुष्कृतं कृतं
तन्न इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः सविता च पुनस्तु पुनः पुनः । नमो अग्रेऽप्युमते नम इन्द्राय न-
मो वरुणाय नमो वारुण्यै नमोभ्यः १२ यदपां क्रूरं यदमेध्यं यदंशांतं तदपगच्छतात् ।
अत्याशनादती पानाद्यच्च उग्रात् प्रतिग्रहात् । तन्नो वरुणो राजा पाणिना ह्यवमशीतु ।
सोहमं पापो विरजो निमुक्तो मुक्त किल्बिषः । नाकस्य पृष्ठमारुह्य गच्छेत् ब्रह्मं सलोक
तां । यश्चाप्यु वरुणः स पुना त्वं घमर्षणः । इमं मे गंगेयमुने सरस्वतिशुतुं द्विस्तोमं स
च तापरुष्णिग्या । असि क्रियामरुद्धे वितस्तया जी कीये शृणु ह्या सुषोमया । ऋतं च
सत्यं चाभीष्टात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्रि रजायत ततः समुद्रो अर्णवः १३ समुद्रा

दर्णवादाधिसंवत्सरोअजायत । अहोरात्राणिविदधाद्विश्वस्यमिषतोवशी । सूर्याचं
 द्रमसौधातायथापूर्वमंकल्पयत् । दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथोसुवः । यत्पृथिव्या
 ॥ रजस्वमांतरिक्षेविरोदसी । इमा ॥ स्तदापोवरुणःपुनात्वधमर्षणः । पुनंतुवसंवः
 पुनातुवरुणःपुनात्वधमर्षणः । एषभूतस्यमध्येभुवनस्यगोप्ता । एषपुण्यंकृतांन-
 ल्लोकानेषमृत्योर्हिरण्मयः । द्यावापृथिव्योर्हिरण्मय ॥ स ॥ श्रितसुवः १४ सनसुवः
 स ॥ शिशाधि । आर्द्रज्वलतिज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलतिब्रम्हाहमस्मि । यो
 हमस्मिब्रम्हाहमस्मि । अहमस्मिब्रम्हाहमस्मि । अहमेवाहंमांजुहोमिस्वाहा ।
 अकार्यकार्यैवकीर्णास्तेनोभ्रूणहागुरुतल्पगः । वरुणोपामधमर्षणस्तस्मात्पापा-
 त्प्रमुच्यते । रजोभूमिस्त्वमा ॥ रोदयस्वप्रवदंतिधीराः । आक्रान्समुद्रःप्रथमेवि
 धर्मन्जनयन्प्रजाभुवनस्यराजा । वृषापवित्रेअधिसानोअव्यैबृहत्सोमोवावृधे-
 सुवानइंदुः १५ परस्ताद्यशोगुहासुममचक्रतुंडायधीमहितीक्ष्णद ॥ प्रायधीम-

द्विपरिप्रतिष्ठितंदेभूर्यच्छतुदधातनाभ्योर्णवःसुवोराजैकंच १ रुद्रोरुद्रश्चदंतिश्च
नंदिःषण्मुखएवंच। गरुडोब्रम्हविष्णुश्चनारसि*हस्तथैवच। आदित्योमिश्रदु-
र्गिश्चक्रमेणद्वादशांभसि १२ ममवचमसुवेनावभावैकात्यायनाय। जातवेदसे-
सुनवामसोममरातीयतोनिदंहातिवेदः। सनःपर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिंधुदु-
रितात्यग्निः। तामग्निवर्णातपसाज्वलंतीवैरोचनाकर्मफलेषुजुष्टा। दुर्गादेवी*शर-
णमहंप्रपद्येसुतरसितरसेनमः। अग्नेत्वंपारयानव्योअस्मान्त्स्वस्तिभिरतिदुर्गा-
णिविश्वा। पूश्चपृथ्वीबहुलानुर्वीभवातोकायतनयायशंयोः। विश्वानिनोदुर्गहा
जातवेदःसिधुन्ननावादुरितातिपर्षि। अग्नेअत्रिवनूमनसागृणानोस्माकंबोध्यवि-
तातनूना। पृतनाजित*सहमानमुग्रमग्नि*दुवेपपरमात्सधस्थात्। सनःपर्षदति
दुर्गाणिविश्वाक्षामहेवोअतिदुरितात्यग्निः। प्रत्नोषिकमीड्योअध्वरेषुसनाच्चहो-
तानव्यश्चसत्सि। स्वांचाग्नेतनुवैपिप्रयस्वास्मभ्यंचसौभगमायजस्व। गोभिर्जु-

ना.
३१

ष्टमयुजोनिषिक्तंतवैद्रविष्णोरनुसंचरेम । नाकस्यपृष्ठमभिसंवसानोवैष्णवीलो-
कडहमादयंतां । अग्निश्रुत्वारीच । भूरन्नमग्नयेष्टथिव्यैस्वाहाभुवोन्नवायवेतरिक्षा
यस्वाहासुवरन्नमादित्यायदिवेस्वाहाभूर्भुवःसुवरन्नचंद्रमसेदिग्भ्यस्वाहानमोदे
वेभ्यःस्वधापितृभ्योभूर्भुवसुवरन्नमो ३ भूरग्नयेष्टथिव्यैस्वाहाभुवोन्नवायवेतरिक्षा
यस्वाहासुवरादित्यायदिवेस्वाहाभूर्भुवसुवश्चंद्रमसेदिग्भ्यस्वाहानमोदेवेभ्यः ।
स्वधापितृभ्योभूर्भुवसुवरन्नॐ ४ भूरग्नयेचपृथिव्यैचमहतेचस्वाहाभुवोन्नवायवे
चांतरिक्षायचमहतेचस्वाहासुवरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहाभूर्भुवः सुवश्च
द्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहतेचस्वाहानमोदेवेभ्यः स्वधापितृभ्योभूर्भुवः
सुवर्महरोम् ५ पाहिनोअग्नएनसेस्वाहा । पाहिनोविश्ववेदसेस्वाहा । यज्ञंपाहिवि
भावंसोस्वाहा । सर्वपाहिशतक्रतोस्वाहा । पाहिनोअग्नएकया । पाह्यतद्वितीयया
पाह्यजैतृतीयया । पाहिगीर्भिश्चतसृभिर्वसोस्वाहा ६ यश्छंदसामृषभोविश्वरूप-

श्रुंदोभ्यश्चुंदास्याविवेश। सचाश्विक्यःपुरोवाचोपनिषदिद्रो ज्येष्ठद्विषा य
ऋषिभ्योनमोद्वेभ्यःस्वधापितृभ्योभूर्भुवःसुवश्चुंदओम् । नमोब्रह्मणेधारणैमे
अस्त्वनिराकरणंधारयिताभूयासंकर्णयोःश्रुतंमाच्योद्वंममामुष्यओम् ७ ऋतंत
पःसत्यंतपःश्रुतंतपःशांतंतपोदमस्तपःशमस्तपोदानंतपोयज्ञंतपोभूर्भुवःसुवब्र
म्हैतदुपास्यैतत्तपः ८ यथावृक्षस्यसंपुष्पितस्यदूराद्गंधोवात्येवंपुण्यस्यकर्मणो-
दूराद्गंधोवातियथासिधारांकर्तव्यं हितामवक्रामेयद्युवेयुवेहवा । विव्हयिष्यामिक-
तंपतिष्यामीत्येवममृतादात्मानंजुगुप्सेत् ११ अणोरणीयान्महतोमहीयाना-
त्मागुहायांनिहितोस्यजंतोः । तमक्रतंपश्यतिवीतशोकोधातुः प्रसादान्महिमा-
नमीशं । सप्तप्राणाः प्रभवैतितस्मात्सप्तार्चिषः समिधः सप्तजिह्वाः । सप्तद्वेमे
लोकायेषुचरंतिप्राणागुहाशयन्निहिताः सप्तसप्त । अतः समुद्रागिरयश्चसर्वेस्मा
त्स्यदंतोसिंधवसर्वरूपा । अतश्चविश्वाओषधयोरसाच्चयेनैषभूतस्तिष्ठत्यंतरात्मा

ना.
३२

। ब्रह्मादेवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणां । श्येनो गृध्राणां * स्वाधि-
तिर्वनानां * सोमः पवित्रमत्येतिरेभन् । अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बन्हीं प्रजां ज-
नयंती * सरूपां । अजो ह्येको जुषमाणो नु शेते जहांत्येनां भुक्तभोगामज्योन्यः १ इ *
सशुचिषद्वसुरैतरिक्षसद्योतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसद्वत्सद्योमसद-
जागोजाक्रतुजा अद्रिजाक्रतुबृहत् । घृतं मिमिक्षिरे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृत-
मुवस्य धामा । अनुष्वधमा वहमादयस्व स्वाहा कृतं वृष भवक्षि हव्यं । समुद्रादूर्मिर्म-
धुमा * उदारदुपा * शुजा सममृतत्वमानट । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां
ममृतस्य नाभिः । वयं नाम प्रब्रवामा घृतेनास्मिन्यज्ञे धारयामानमोभिः । उपब्रह्मा
शृणवच्छस्यमानं चतुः शृणोवमीद्वीर एतत् । चत्वारि शृङ्गात्रयो अस्य पादा द्वे शी-
र्षे सप्तहस्ता सो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यो * आविवेश २ त्रि-
धा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासौ घृतमन्वविदन् । इन्द्र एक * सूर्य एकैज जानवे-

नादेकस्वधयानिष्टतक्षुः । योदेवानांप्रथमंपुरस्ताद्विश्वाधियोरुद्रोमहर्षिः । हि-
रण्यगर्भंपश्यतजायमानस्सर्गोदेवः शुभयाः स्मृत्याः संयुनक्तुं । यस्मत्परन्नापरम-
स्ति किंचिद्यस्मान्नाणीयोनज्यायोस्ति कश्चित् । वृक्षइवस्तब्धोदिवितिष्ठत्येकस्ते-
नेदंपूर्णपुरुषेण सर्वं । न कर्मणानप्रजयाधनेन त्यागैर्नैके अमृतत्वमानशुः । परेण
नाकं निहितंगुहायां बिभ्राजदेतद्यतयो विशंति । वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः ।
संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः । ते ब्रह्मलोके तु परांतकाले परामृतास्तपरिमुच्यंति
सर्वे । दहं विपापं परमैश्वर्यभूतं यत्पुंडरीकपुरमध्यसुस्थं । तत्रापि दहंगगनं विशो-
कः स्तस्मिन् यदंतः तदुपासितव्यं । यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदांते च प्रतिष्ठितः । त-
स्य प्रकृतिं लीनस्य यः परं समहेश्वरः ३ अजो न्या आविवेश सर्वे चत्वारिंश १२ सह-
स्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवं । विश्वेनारायणं देवमक्षरं परमंपदं । विश्वतः परमा-
न्नित्यं विश्वेनारायणं हरिं । विश्वमेवेदंपुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति । पतिं विश्वस्या-

त्मेश्वर * शाश्वत * शिवमच्युतं । नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणं । नाराय
 णपरज्योतिरात्माना नारायणपरः । नारायणपरं ब्रम्हतत्वं नारायणः परः । नारायणे
 परोध्याता ध्यानं नारायणः परः । यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयते पिव १ अंतर्बहि
 श्र्यतत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः । अनंतमव्ययं कवि * समुद्रं तं विश्वं शंभुवं । पद्म
 कोशप्रतीकाश * हृदयं चाप्यधोमुखं । अधोनिष्ठा वितस्त्या तं नाभ्यामुपरितिष्ठति ।
 ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महत् । संतत * शिलाभिस्तुल्यं व्याकोशस-
 न्निभं । तस्यां तं सुषिर * सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितं । तस्य मध्ये महानं शिर्विश्वाच्च
 विश्वतो मुखः । सोऽग्रं भुग्विभं जंतिष्ठन्नाहारमजरः कविः । तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्म
 यस्तस्य संतता । संतापयति स्वं देहमापादतलमस्तंगः तस्य मध्ये वह्निशिखा अणी
 योर्ध्वाव्यवस्थिता । नीलतोयदं मध्यस्था द्विद्युल्लेखेव भास्वरा । नीवारशूकं वत्तन्वी
 पीताभास्वत्यणूपमा । तस्यां शिखायामध्ये परमात्मा व्यवस्थितः । स ब्रम्हः स शि-

वःसहरिःसैद्रःसोक्षरःपरमस्वराट् २ अपिवासंतताषट्चा ३ आदित्योवाएषए-
तन्मंडलंतपतितत्रताश्रुचस्तट्चामंडल * सश्रुचांलोकोथयएषएतस्मिन्मंडले
चिर्दीप्यतेतानिसामानिससाम्नांलोकोथयएषएतस्मिन्मंडलेचिषिपुरुषस्तानि
यजू * विसयजुषामंडल * सयजुषांलोकःसैषात्रयैवविद्यातपतियएषोतरादि-
त्येहिरण्मयःपुरुषः १४ आदित्योवैतेजओजोबलयशःश्वक्षुःश्रोत्रमात्मानमनोम-
न्युर्मनुर्मृत्युःसत्योमित्रोवायुराकाशःप्राणोलोकपालःकःकिंकंतत्सत्यमन्नममृतो
जीवोविश्वःकतमःस्वयंभुव्रम्हैतदमृतएषपुरुषएषभूतानामधिपतिर्ब्रम्हणसायु-
ज्य * सलोकतामाप्नोत्येतासमिवदेवताना * सायुज्य * सार्ष्टिता * समानलोक-
तामाप्नोतियएवंवेदैत्युपनिषत् १५ निधनपतयेनमः । निधनपतांतिकायनमः ।
ऊर्ध्वायनमः । ऊर्ध्वलिङ्गायनमः । हिरण्यायनमः । हिरण्यलिङ्गायनमः । सुवर्णाय-
नमः । सुवर्णलिङ्गायनमः । दिव्यायनमः । दिव्यलिङ्गायनमः । भवायनमः । भव

ना.
३४

लिङ्गायनमः । शर्वायनमः । शर्वलिङ्गायनमः । शिवायनमः । शिवलिङ्गायनमः । ज्व
लायनमः । ज्वललिङ्गायनमः । आत्मायनमः । आत्मलिङ्गायनमः । परमायनमः
। परमलिङ्गायनमः । एतत्सोमस्यंसूर्यस्यसर्वलिङ्गस्थापयति प्राणिमंत्रं पवित्रं ।
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः । भवे भवे नाति भवे भवस्व मां । भवो
द्भवाय नमः १ ७ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः क
लविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदम
नाय नमो ममोन्मनाय नमः १ ८ अघोरैर्भ्यो थघोरैर्भ्यो घोरघोरं तरेभ्यः । सर्वैर्भ्यः स
र्वशैर्भ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः १ ९ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो
रुद्रः प्रचोदयात् २० ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो
धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवो २१ नमो हिरण्यवाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्य
रूपाय हिरण्यपतये विकापतये उमापतये पशुपतये नमोनमः २२ ऋतः सत्यं परं ब्र-

३०

३४

महपुरुषैकृष्णपिंगलं । ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमोनमः २३ सर्वो वै रुद्रः
स्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । पुरुषो वै रुद्रः स्तन्महोनमोनमः । विश्वं भूतं भुवनं चित्रं ब्र-
ह्मधा जातं जायमानं च यत् । सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु २४ कद्रुद्राय प्रचे-
तसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेमशंतमहृदे । सर्वो ह्येष रुद्रास्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु
२५ यस्य वै कैकत्यग्निहोत्रहवणी भवति प्रत्येवास्याहुतयः स्तिष्ठंत्यथो प्रातिष्ठित्यै
२६ कृणुष्वपाजइति पंच २७ अदितिर्देवाग्निधर्वा मनुष्याः पितरो सुरास्तेषां सर्वं
भूतानां माता मेदिनी महता महीसा वित्री गायत्री जगत्पुर्वी पृथ्वी ब्रह्मला विश्वा भूता
कंतमाकाया सा सत्येत्यमृतेति वसिष्ठः २८ आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्रा-
णाव आपः पशव आपो न्नमापो मृतमापः संघाडापो विराडापः स्वराडापः छंदाः स्या-
पो ज्योतीः ष्यापो यजू ष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ॐ २९
आपः पुनंतु पृथिवीं पृथिवीपूता पुनातु मां । पुनंतु ब्रह्मणः सति ब्रह्मपूता पुनातु मां ।

ना.
३५

यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वेषु नंतु मामापौ सतां च प्रतिग्रहः स्वाहा
३० अग्निश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षतां । यदन्हा पापं
मकार्षे । मनसा वाचा हस्ताभ्यां । पद्भ्यामुदरेण शिश्ना । अहस्तदवलुपतु । यत्किंच
दुरितं मयि । इदमहं माममृतयोनौ । सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ३१ सूर्यश्च माम-
न्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षतां । यद्वा त्रियापापं मकार्षे । मनसा
वाचा हस्ताभ्यां । पद्भ्यामुदरेण शिश्ना । रात्रिस्तदवलुपतु । यत्किंच दुरितं मयि । इ-
दमहं माममृतयोनौ । सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ३२ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म । अग्नि
देवता ब्रह्म इत्यार्षे । गायत्रं छंदं परमात्मं सरूपं । सायुज्यं विनियोगं ३३ आयातु व-
रदा देवि अक्षरं ब्रह्म संमितं । गायत्रीं छंदं सामातेदं ब्रह्म जुषस्व मे । यदन्हा त्कुरुते
पापं तदन्हा त्प्रतिमुच्यते । यद्वा त्रियात्कुरुते पापं तद्वा त्रियात्प्रतिमुच्यते । सर्व-
वर्णं महादेवि संध्या विद्ये सुरस्वति ३४ ओजोसि सहोसि बलमसि भ्राजोसि देवानां

३०

३५

धामनामासि विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूरो । गायत्रीमावाहयामि-
सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाहयामि छंदऋषीणावाहयामि श्रियमावाहया-
मि । गायत्रिया गायत्री छंदो विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता ऽग्निर्मुखं ब्रम्हा शिरो
विष्णुर्हृदयं * रुद्रः शिखा पृथिवी योनि प्राणा पान व्यानोदान समाना स प्राणा श्वेत
वर्णा सांख्यायन स गोत्रा गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः पंचशीर्षो पन-
यने विनियोगः । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ सुवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । ओमापो ज्योतिर-
सो मृतं ब्रम्ह भू भुवः सुवरो ३५ उत्तमै शिखरे जाते भूम्यां पर्वतसूधीनि । ब्राह्मणेभ्यो
भ्यनुज्ञाता गुच्छदैवियथा सुखं । स्तुतो मया वरदा वैदमाता प्रचोदयंती पवनैर्द्विजा-
ता । आयुः पृथिव्यां द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा प्रजातुं ब्रह्मलोकं । घृणिः सूर्य आदि-
त्यो न प्रभावात्यक्षरं । मधुक्षरं तितद्रसं । सत्यं वै तद्रसमापो ज्योतीरसो मृतं ब्रम्ह भू

भुवःसुवरो ३७ ब्रह्ममेतुमां । मधुमेतुमां । ब्रह्ममेवमधुमेतुमां । यास्तैसोमप्रजाव
 त्सोभिसोअहं । दुष्वप्रहंदुरुषह । यास्तैसोमप्राणा*स्तांजुहोमि । त्रिसुपर्णम
 याचितंब्राम्हणायदद्यात् । ब्रम्हहत्यांवाएतेघ्नंति । येब्राम्हणास्त्रिसुपर्णपठंति ।
 तेसोमंप्राप्नुवंति । आसहस्रात्पंक्तिपुनंति ३८ ॐ ब्रह्ममेधयामधुमेधया । ब्रह्ममेव
 मधुमेधया । अद्यानोदेवसवितःप्रजावत्सावीःसौभगं । परादुष्वग्निय*सुव । वि-
 श्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरांसुवा । यद्भद्रंतन्मआसुव । मधुवाताऋतायतेमधु-
 क्षरंतिसिंधवः । माध्वीर्नःसंत्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसिमधुमत्पार्थिव*रजः । म
 धुद्यौरस्तुनःपिता । मधुमान्नोवनस्पतिर्भधुमा* अस्तुसूर्यः । माध्वीर्गावोभवंतु-
 नः । यद्भमंत्रिसुपर्णमयाचितंब्राम्हणायदद्यात् । भ्रूणहत्यांवाएतेघ्नंति । येब्राम्ह
 णास्त्रिसुपर्णपठंति । तेसोमंप्राप्नुवंति । आसहस्रात्पंक्तिपुनंति ॐ ३९ ब्रह्ममेध
 वा । मधुमेधवा । ब्रह्ममेवमधुमेधवा । ब्रह्मादेवानांपदवीःकवीनामृषिर्विप्राणाम-

हिषोमृगाणां । श्येनो गृधाणां स्वर्धितिर्वनानां * सोमं पवित्रमत्योतिरेभन् । ह * सः
शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्भोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसद्वत्सद्योमसदजा
गोजाक्रुतजा आद्रजाक्रुतंबृहत् । क्रुचेत्वारुचेत्वासमित्स्त्रवंतिसरितोनधेनाः ।
अंतर्हृदामनसापूयमानाः । घृतस्य धारां अभिचाकशीमि । हिरण्ययो वेतुसोमध्यं
आसां । तस्मिन्त्सुपर्णो मधुकृत्कुलायै भजन्नास्ते मधुदेवताभ्यः । तस्यासते हरयः
सप्ततीरे स्वधांदुहानाममृतस्य धारां । यद्दं त्रिसुपर्णमयांचितं ब्राम्हणाय दद्यात्
वीरहत्यां वा एते धैर्यं । ये ब्राम्हणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति । ते सोमं प्राप्नुवंति । आसहस्त्रा
त्पंक्तिं पुनन्ति । ॐ मेधादेवी जुषमाणान् आगाद्विश्वाचीं भद्रासुमनस्यमाना । त्वया
जुष्टानुदमाना दुरक्तान् बृहद्वदेमविदथै सुवीराः । त्वया जुष्टं ऋषिर्भवति देवित्वया
ब्रह्मागतश्रीरुतत्वया । त्वया जुष्टः श्चित्रं विंदते वसुसानो जुषस्व द्रविणो न मेधे ४१
मेधां मद्भद्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती । मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्त्रजा ।

ना.
३७

अप्सरासु च यामेधा गंधर्वेषु च यन्मनः । दैवी मेधा सरस्वती सामा मेधा सुरभिर्जुष-
ता स्वाहा ४२ आमा मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या । ऊर्ज-
स्वती पयसा पिबन्माना सामा मेधा सुप्रतीका जुषन्तां । मयि मेधामयि प्रजामय्यज्ञ-
स्तेजो दधातु मयि मेधां मयि प्रजामयीन्द्र इन्द्रियं दधातु मयि मेधां मयि प्रजामयि सूर्यो
भ्राजो दधातु ४४ अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैव स्वतो नो अभयं कृणोतु । पूर्णं वन-
स्पतेरिवाभिनः शीयता * रयिः सचातानः शचीपति ४५ परं मृत्यो अनुपरे हि पं-
थायस्ते स्वइतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते तैब्रवीमिमानः प्रजा * रीरिषो मो-
तवरान् ४६ वातं प्राणं मनसा न्वारं भामहे प्रजापतियो भुवनस्य गोपाः । स नो मृ-
त्योस्त्रायतां पात्व * हंसो ज्योर्जीवा जरामंशीमहि ४७ अमुत्र भूयादध्वयद्यमस्य व-
हस्पतेरभि शस्तेरमुचः । प्रत्यो हता मश्विनां मृत्युमस्माद्देवानां मग्नाभिषजा शची-
भिः ४८ हरि * हरं तमनुयंति देवा विश्वस्येशानं वृषभं मतीनां । ब्रम्ह सरूपमनु मे

दमागादयनमाविवंधीर्विक्रमस्व ४९ शकलैरग्निमिधानउभौलोकौसनेमहं । उभ
योर्लोकयोर्ऋध्वातिमृत्युंतराम्यहं ५० माछिदोमृत्योमवंधीर्मामेबलंविहोमाप्र-
मोषीः । प्रजांमामेरीरिषआयुरुग्रनृचक्षसंत्वामहिषाविधेम ५१ मानौमहांतमुतमा
नौअर्भकंमानउक्षंतमुतमानंउक्षितं । मानौवधीःपितरंमोतमातरंप्रियामानंस्त-
नुवोरुद्ररीरिष ५२ मानंस्तोकेतनयेमानवायुषिमानोगोषुमानोअश्वेषुरीरिषः । वी
रान्मानोरुद्रभामितोवंधीर्हविष्मंतोनमसाविधेमते । प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योवि-
श्वांजातानिपारितावभूव । यत्कांमास्तेजुहुमस्तन्नोअस्तुवयस्स्यामपतयोरयीणां ।
५४ स्वस्तिदाविशस्पतिर्वृत्रहाविमृधौवशी । वृषेद्रःपुरएतुनःस्वस्तिदाअभयंक
रः ५५ अयंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनं । उर्वारुकमिववंधनान्मृत्योर्मुक्षियमामृ
तात् ५६ येतैसहस्रमयुजंपाशामृत्योमर्त्यायहंतवे । तान्यज्ञस्यमाययासर्वानवय
जामहे ५७ मृत्यवेस्वाहामृत्यवेस्वाहा ५८ देवकृतस्यैनसोवयजनमसिस्वाहा ।

ना. मनुष्यकृतस्यैनसोवयजनमसिस्वाहा । पितृकृतस्यैनसोवयजनमसिस्वाहा ।
 ३८ आत्मकृतस्यैनसोवयजनमसिस्वाहा । अन्यकृतस्यैनसोवयजनमसिस्वाहा । अ-
 स्मत्कृतस्यैनसोवयजनमसिस्वाहा । यद्विवाचनक्तंचैनश्रकृमतस्यावयजनमसि-
 स्वाहा । यत्स्वपंतश्रजाग्रतश्रनश्रकृमतस्यावयैजनमसिस्वाहा । यत्सुषुप्तश्रजा-
 ग्रतश्रैनश्रकृमतस्यावयजनमसिस्वाहा । यद्विद्वाः सश्चाविद्वाः सश्चैनश्रकृमत-
 स्यावयजनमसिस्वाहा । एनसएनसोवयजनमसिस्वाहा ५९ यद्वोदेवाश्रकृमजि-
 वह्यागुरुमनसोवाप्रयुंतीदेवहेडनं । अरावायोनो अभिदुच्छुनायतेतस्मिंतदेनोव-
 सवोनिधैतनस्वाहा ६० कामोकारुषीन्नमोनमः । कामोकार्षीत्कामः करोतिनाहंक-
 रोमिकामः कर्तानाहंकर्ताकामः कारयितानाहंकारयिता एषतेकामकामायस्वाहा
 ६१ मन्युरकार्षीरुन्नमोनमः । मन्युरकारुषीन्मन्युः करोतिनाहंकरोमिमन्युः कर्ता-
 नाहंकर्तामन्युः कारयितानाहंकारयिता एषतेमन्योमन्यवेस्वाहा ६२ तिलांजुहो-

मिसरसा*सपिष्टान्गंधारममचितेरमैतुस्वाहा । गावोहिरण्यंधनमन्नपान*सर्वेषा
*श्रियैस्वाहा । श्रियंचलक्षिमचपुष्टिंचकीर्तिंचानृण्यतां । ब्रम्हण्यंबहुपुत्रतां । श्र-
द्धामेधेप्रजासंददातुस्वाहा ६३ तिलाःकृष्णास्तिलाश्वेतास्तिलासौम्यावशानु
गाः । तिलाःपुनंतुमेपापंयत्किंचिदुरितंमयिस्वाहा । चोरस्यान्नंनवश्राद्धंब्रम्हहागुं
रुतल्पगः । गोस्तेय*सुरापानंभ्रूणहत्यातिलाशांति*शमयंतुस्वाहा । श्रीश्वल-
क्ष्मीश्वपुष्ठीश्वकीर्तिंचानृण्यतां । ब्रह्मण्यंबहुपुत्रतां । श्रद्धामेधेप्रज्ञातुजातवेदःसं
ददातुस्वाहा ६४ प्राणापानव्यानोदानसमानामैशुध्यंतांज्योतिरहंविरजाविपा-
प्माभूयास*स्वाहा । वाङ्मश्रुश्रोत्रजिह्वाप्राणरेतोबुध्याकृतिःसंकल्पामैशुध्यं
तांज्योतिरहंविरजाविपाप्माभूयास*स्वाहा । त्वक्कर्ममा*सरुधिरमेदोमज्जास्ना
यवोस्त्रीनिमैशुध्यंतांज्योतिरहंविरजाविपाप्माभूयास*स्वाहा । शिरःपाणिपाद
पार्श्वपृष्ठोरुदरजंघशिश्नोपस्थापायवोमैशुध्यंतांज्योतिरहंविरजाविपाप्माभूया

सु॒स्वाहा । उत्तिष्ठपुरुषहरितपिंगललोहिताक्षिदेहिदेहिददापयितामैशुध्यंतां ।
 ज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा ६५ पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशामैशु॒
 ध्यंतांज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा । शब्दस्पर्शरूपरसगंधामैशुध्यंतां
 ज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा । मनोवाक्कायकर्माणिमैशुध्यंतांज्योतिरहं
 वि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा । अव्यक्तभावैरलंकारैर्ज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒
 यासु॒स्वाहा । आत्माभैशुध्यंतांज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा । अंतरा
 त्माभैशुध्यंतांज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा । परमात्माभैशुध्यंतांज्यो
 ति॒रहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒स्वाहा । क्षुधेस्वाहा क्षुतिपासायस्वाहा । विविट्यै
 स्वाहा । ऋग्विधानायस्वाहा । कषौत्कायस्वाहा । क्षुतिपासामलंज्येष्ठामलक्ष्मीनां
 शयाम्यहं । अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे पाप्मानं स्वाहा । अन्नमयप्राणमयम
 नोमयविज्ञानमयमानन्दमयमात्माभैशुध्यंतांज्योतिरहंवि॒रजावि॒पाप्माभू॒यासु॒

स्वाहा ६६ अग्नयेस्वाहा । विश्वेभ्यो देवेभ्यस्वाहा । ध्रुवाय भूमाय स्वाहा । ध्रुवसि
तये स्वाहा । अच्युतक्षितये स्वाहा । अग्नयेऽस्विष्टकृते स्वाहा । धर्माय स्वाहा । अध-
र्माय स्वाहा । अद्भ्यः स्वाहा । ओषधिवनस्पतिभ्यस्वाहा १ रक्षो देवजनेभ्यः स्वाहा ।
गृह्याभ्यः स्वाहा । अवसानेभ्यः स्वाहा । अवसानपतिभ्यः स्वाहा । सर्वभूतेभ्यः स्वा-
हा । कामाय स्वाहा । अंतरिक्षाय स्वाहा । यदेजति जगति यच्च चेष्टति यन्नाम्नो भा-
गो यन्नाम्ने स्वाहा । पृथिव्यै स्वाहा । अंतरिक्षाय स्वाहा । दिवे स्वाहा । सूर्याय स्वा-
हा । चंद्रमसे स्वाहा । नक्षत्रेभ्यः स्वाहा । इंद्राय स्वाहा । बृहस्पतये स्वाहा । प्रजा-
पतये स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा । स्वधापितृभ्यः स्वाहा । नमोरुद्राय पशुपतये स्वाहा ।
३ देवेभ्यस्वाहा । पितृभ्यः स्वधास्तु । भूतेभ्यो नमः । मनुष्येभ्यो हंता । प्रजापतये
स्वाहा । परमेष्ठिने स्वाहा । यथाकूपः शतधारः सहस्रधारो अक्षितः । एवामे अस्तु
धान्य * सहस्रधारमक्षितं । धनं धान्यै स्वाहा । ये भूताः प्रचरन्ति दिवान् कंबलिमि-

ना.
४०

च्छंतौ वितुदस्य प्रेण्याः । तेभ्यो बलिपुष्टिकामो हरामि मयि पुष्टिपुष्टिपतिर्दधातु-
स्वाहा ६७ ॐ तत् ब्रह्मा । ॐ तद्वायुः । ॐ तद्वात्मा । ॐ तत्सत्यं । ॐ तत्सर्वं ।
ॐ तत्पुरोर्नमः । अंतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वं इं-
द्रस्त्वं अद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्मस्त्वं प्रजापतिः । त्वं तदाप आपो ज्योतिरसो मृतं ब्रम्ह
भूर्भुवः सुवरोम् ६८ श्रद्धायां प्राणे निविष्टो मृतं जुहोमि । श्रद्धायां मपाने निविष्टो मृतं
जुहोमि । श्रद्धायां व्याने निविष्टो मृतं जुहोमि । श्रद्धायां मुदाने निविष्टो मृतं जुहोमि
। श्रद्धायां समाने निविष्टो मृतं जुहोमि । ब्रह्मणि म आत्मा मृतं त्वाय । अमृतोऽपस्तरं
णमसि । श्रद्धायां प्राणे निविष्टो मृतं जुहोमि । शिवो मां विशा प्रदाहाय । प्राणाय स्वा-
हा । श्रद्धायां मपाने निविष्टो मृतं जुहोमि । शिवो मां विशा प्रदाहाय । अपानाय स्वा-
हा । श्रद्धायां व्याने निविष्टो मृतं जुहोमि । शिवो मां विशा प्रदाहाय । व्यानाय स्वाहा ।
श्रद्धायां मुदाने निविष्टो मृतं जुहोमि । शिवो मां विशा प्रदाहाय । उदानाय स्वाहा ।

३०
४०

श्रद्धायाः समाने निविष्टो मृतं जुहोमि । शिवो मां विशा प्रदाहाय । समानाय स्वाहा ।
ब्रह्मणि म आत्मा मृतत्वाय । अमृता पिधान मां सि ६९ श्रद्धायां प्राणे निविश्यामृतं
हुतं । प्राणमन्त्रेनाप्यायस्व । श्रद्धायां पाने निविश्यामृतं हुतं । अपानमन्त्रेनाप्याय
स्व । श्रद्धायां व्याने निविश्यामृतं हुतं । व्यानमन्त्रेनाप्यायस्व । श्रद्धायां मुदाने नि
विश्यामृतं हुतं । उदानमन्त्रेनाप्यायस्व । श्रद्धायाः समाने निविश्यामृतं हुतं । स
मानमन्त्रेनाप्यायस्व ७० अंगुष्ठमात्रः पुरुषो गुणं च समाश्रितः । ईशः सर्वस्य जग
तः प्रभुः प्रीणाति विश्वभुक् ७१ वाङ्मा आसन् । नसोः प्राणः । अक्षयोश्चक्षुः । कर्णयोः
श्रोत्रं । बाहुवोर्बलं । उरुवोरोजः । अरिष्टा विश्वान्यङ्गानि तनूः । तनुवां मे सह नमस्ते
अस्तु मामाहिः ७२ वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रा प्रियमैधा ऋषयो नाधमानाः । अ
पध्वांतमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्ममुग्ध्यस्मान्निधयेव ब्रह्मान् ७३ प्राणानां ग्रंथिरसिरुद्रो मां
विश्रान्तकः । तेनान्नेनाप्यायस्व ७४ नमोरुद्राय विष्णवे मृत्युर्भपाहि ७५ त्वमन्नेद्यु

ना.
४९

भिस्त्वमांशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मनास्परि। त्वं वनेभ्यःस्त्वमोषधीभ्यःस्त्वन्न-
 णानृपते जायसे शुचिः ७६ शिवेन मे संतिष्ठस्व स्योनेन मे संतिष्ठस्व सुभूतेन मे संति-
 ष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन मे संतिष्ठस्व यज्ञस्यार्धे मनु संतिष्ठस्वोप ते यज्ञनम उप ते नम उप ते
 नमः ७७ सत्यं परं परं सत्यं सत्यं ननु सुवर्गा ल्लोकाच्यवंते कदाचन सताः हि सत्यं
 तस्मात्सत्ये रमंते तप इति तपो नानाशानात्परं यद्विपरं तपस्तदुर्ध्वं तदुराध्वं तस्मा-
 त्तपामिरमंते दम इति नियतं ब्रह्मचारिणः स्तस्माद्दमे रमंते शम इत्यरं ण्ये मुनयः स्त-
 स्माच्छमे रमंते । दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसंति दानां न्नातिदुश्चरं तस्माद्दा-
 ने रमंते धर्म इति धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं धर्मान्नातिदुष्करं तस्माद्धर्मे रमंते प्रजन-
 इति भूयाः सस्तस्माद्भूइष्टाः प्रजायंते तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजनने रमंते श्रय इत्याह त-
 स्मादश्रय आधातव्या अग्निहोत्रमित्याह तस्मादग्निहोत्रे रमंते यज्ञ इति यज्ञो हि दे-
 वास्तस्माद्यज्ञे रमंते मानसमिति विद्वांसः स्तस्माद्विद्वांसः एव मानसे रमंते न्या-

सदतिब्रम्हाब्रह्माहिपरः परोहिब्रम्हातानिवाएतान्यवराणिपरा ॥ सिन्यामएवा-
त्यरेचयद्यएवंवेदैत्युपनिषत् ७८ प्राजापत्योहारुणिः सुपर्णेयः प्रजापतिपितरमु-
पससारकिंभगवंतः परमंवदंतीति तस्मै प्रौवाच सत्येन वायुरावातिसत्येनादित्यो-
रोचतोदिविसत्यंवाचः प्रतिष्ठासत्ये सर्वप्रतिष्ठितं तस्मात् सत्यं परमंवदंति तपसा दे-
वा देवतामग्र आयन्त पसर्षयः सुवरन्व विदन्त पसा सप्तान् प्रणुदामारातिस्तप-
सि सर्वप्रतिष्ठितं तस्मात्तपः परमंवदंति दमेन दांताः किलिबषमवधून्वन्ति दमेन ब्रह्म-
चारिणः सुवरगच्छन् दमो भूतानां दुराधर्षं दम सर्वप्रतिष्ठितं तस्माद्दमः परमंवदंति-
शमेन शांताः शिवमाचरन्ति शमेन नाकं मुनयो न्व विदन् छमो भूतानां दुराधर्षं छमे स-
र्वप्रतिष्ठितं तस्माच्छमः परमंवदंति दानं यज्ञानां वरूथं दक्षिणालोके दातार ॥ सर्वभू-
तान्युपजीवन्ति दाने नारातीरपानुदंत दानेन द्विषन्तो मित्रा भवंति दाने सर्वप्रतिष्ठा-
तं तस्माद्दानं परमंवदंति धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजाउपसर्पति ध-

ना.

४२

मेणपापमपनुदातिधर्मेसर्वप्रतिष्ठितं तस्माद्दुर्मपरमंवदति प्रजननं वै प्रतिष्ठालोके
 साधुप्रजायास्तंतुतन्वानः पितॄणामनृणो भवतितदेवतस्या अनृणं तस्मा प्रजननं
 परमंवदत्यग्नयो वै त्रयी विद्या देवयानः पंथा गार्हपत्य ऋक् यजुर्वेद विरथं तरमन्वाहार्य-
 पचनं यजुरं तरीक्षं वामदेव्यमाहवनीयः सामं सुवर्गो लोको बृहत्तस्मादग्नीन् परमंव-
 दत्यग्निहोत्रं सायं प्रातर्गृहाणां निष्कृतिः स्विष्टं सुहृतं यज्ञक्रतूनां प्रायणं सुवर्ग-
 स्य लोकस्य ज्योतिःस्तस्मादग्निहोत्रं परमंवदति यज्ञ इति यज्ञेन हि देवा दिवं गत्वा य-
 ज्ञेना सुरानपातुदंत यज्ञेन द्विषं तो मित्रा भवति यज्ञे सर्वप्रतिष्ठितं तस्माद्यज्ञं परमंव-
 दति मानसं वै प्राजापत्यं पवित्रं मानसेन मनसा साधु पश्यति मानसा ऋषयः प्रजा अ-
 सृजंत मानसे सर्वप्रतिष्ठितं तस्मान्मानसं परमंवदति न्यास इत्याहुर्मनीषिणो ब्रह्मा-
 णो ब्रह्मा विश्वः कतमः स्वयं भुप्रजापतिः संवत्सर इति संवत्सरो सावा दित्यो य एष-
 आदित्ये पुरुषः स परमेष्ठी ब्रह्मात्मा याभिरादित्यस्तपति रश्मिभिस्ताभिः पर्जन्यो

वर्षतिपुर्जन्येनौषधिवनस्पतयः प्रजायंत ओषधिवनस्पतिभिरन्नं भवत्यन्नेन प्रा-
णाः प्राणैर्बलं बलैर्न तपसस्तपसा श्रद्धा श्रद्धायां मेधामेधया मनीषामनीषयामनो-
मनसा शांतिः शांत्या चित्तं चित्तेन स्मृतिः स्मृत्या स्मारः स्मारेण विज्ञानं विज्ञानेन ना-
त्मानं वेदयति तस्मादन्नं ददन्त्सर्वाण्येतानि ददात्यं नात् प्राणा भवंति भूतानां प्रा-
णैर्मनो मनसश्च विज्ञानं विज्ञानादानं दो ब्रह्म योनिः स वा एष पुरुषः पञ्चधा पञ्चात्मा-
येन सर्वमिदं प्रोतं पृथिवी चांतरिक्षं च द्यौश्च दिशश्चावांतरदिशश्च स वै सर्वमिदं ज-
गत्संभूतः स भव्यं जिज्ञासकृत् ऋतुं जारयिष्या श्रद्धा सत्यो महस्वान्तपसो वरि-
ष्ठा ज्ञात्वा तमेवं मनसा हृदा च भूयान्मृत्युमुपयाहि विद्वान् तस्मान् न्यासमेषान् तप-
सामतिरिक्तमाहुर्वसुरण्वो विभूरासि प्राणेत्वमसि संधाता ब्रह्म त्वमसि विश्वधृते ज्यो-
दास्त्वमस्य अग्निरसि वर्चो दास्त्वमसि सूर्यस्य द्युम्नो दास्त्वमसि चंद्रमस उपयाम गृ-
हीतोसि ब्रह्मणे त्वामहस ॐ मित्यात्मानं युंजीतैतद्वै महोपनिषदं देवानां गुह्यं एव

दं ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति तस्माद्ब्रह्मणो महिमानमित्युपनिषत् ७९ तस्यैवं विदु-
 षो यज्ञस्यात्मा यजमानः श्रद्धापत्नी शरीरमिध्ममुरो वेदिलोमानि वह्निर्वेदः शिखा ह-
 दं यं यूपः काम आज्यं मन्युः पशुस्तपो भिर्दमः शमयिता दक्षिणा वाध्वोता प्राण उद्वा-
 ता चक्षुरध्वर्युर्मनो ब्रम्हा श्रोत्रं मग्नीद्यावधियते सा दीक्षायदभ्राति तद्धविर्यात्पिबन्ति
 तदस्य सोमपानं यद्रमते तदुपसदो यत्संचरंत्युप विशंत्युतिष्ठते च स प्रवर्ग्यो यन्मु-
 खं तदा हवनीयो याव्याहति राहुतिर्यदस्य विज्ञानं तज्जुहोति यत्सायं प्रातरंति तत्स-
 मिधं यत्प्रातर्मध्यं दिनं सायं च तानि सर्वानानिये अहोरात्रे ते दर्शपूर्णमासौ यैर्धमा-
 साश्च मासाश्च ते चातुर्मास्यानियक्रुतवस्ते पशुबंधाये सैवत्सराश्च परिवत्सराश्च ते
 हर्गणाः सर्ववेदसंवा एतत्सुत्रं यन्मरणं तदवभृथ एतद्वै जरामर्यमग्निहोत्रं सुत्रं य-
 एवं विद्वानुदगयने प्रमीयते देवानामेव महिमानं गत्वा दित्यस्य सायुज्यं गच्छत्यथ यो
 दक्षिणे प्रमीयते पितॄणामेव महिमानं गत्वा चंद्रमंसः सायुज्यं सलोकतामाप्नोत्ये-

तोवैसूर्याचंद्रमसोर्महिमानौब्राम्हणोविद्वानभिजयतितस्माद्ब्रह्मणोमहिमानमा-
प्नोतितस्माद्ब्रह्मणोमहिमानं ८० सहनाववतु । सहनोभुनक्तु । सहवीर्यंकरवावहे
। तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहे । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । ६५ ॥

हे पुस्तक पुणे पेठ सदाशिव येथे नारो आपाजी गोडबोले यांचे “ वृत्तप्रसारक ” छापखान्यांत
भास्कर नारायण गोडबोले यांनी छापून प्रसिद्ध केले माहे नोव्हेंबर सन १९०२ इसवी.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts



॥ इतिपंचोपनिषत् समाप्तः ॥

IGNCA RAR
Indira Gandhi National
Centre for

ACC. No. R-727